जनवरी 2006
Rs. 12 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मैन के
कारनामे
G-man
नव वर्ष की शुभ कामनाएँ

सच् बोल दू ?

Kya karoon? What to do?

मैं फिर अटक गई...
पर मैं मानूंगी
आपका फ़ैसला.
मुझसे हंगामा टीवी पर
मिलिए और
7886 पर SMS करके
बताइए कि मैं क्या करूं.
आप मुझे कॉल* भी कर सकते हैं
या लॉग ऑन करें
www.sanya.hungamatv.com

SUNSILK presents

Sanya

सोमवार–गुरुवार,
शाम 7.30 बजे

www.o2lab.biz

hungama

*'ऑप्शन 1' के लिए 1904-424-7886-01
और 'ऑप्शन 2' के लिए 1904-424-7886-02
रु. 3/SMS और रु. 2.40/कॉल

UTV

www.hungamatv.com

चन्दामामा सम्पुट - ५७ जनवरी २००६ सञ्चिका - १

विशेष आकर्षण

अंतरंग

- पाठकों के लिए एक पन्ना ...०६
- प्रतिभाशाली बाल लेखकों को आमन्त्रण ...०७
- गजलक्ष्मी-गुंजा ...०८
- भयंकर घाटी - ५ ...१३
- एंड्रोमेनिया अल्टीमेटम भाग १ ...३१
- *भारत की सांस्कृतिक घटनाएँ :* सामरिक नृत्य का पर्व ...४३
- पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता ...४४
- पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (मई '०५) ...४५
- समाचार झलक ...४६
- जातक कथा ...४७
- अपात्र दान ...५९
- आर्य - ३१ ...६३
- आप के पन्ने ...६८
- चित्र शीर्षक स्पर्धा ...७०

यथार्थ चित्र (बेताल कथाएँ) ...१९

बिहार की एक लोक कथा ...२४

महान व्यक्तियों के जीवन की झाँकियाँ - १ ...२९

रामायण - १ ...५१

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

महान पुरुषों की झाँकियाँ

बारह महीनों के अन्त में एक वर्ष से बाहर निकलने के बाद हम नये वर्ष में प्रवेश करते हैं। हम ऐसा करते समय यह आशा करते हैं कि नया साल हमारे और हमारे परिजनों के लिए मंगलमय होगा। स्वाभाविक ही हम पीछे मुड़कर देखना चाहते हैं और पिछले एक साल में अपने जीवन में हुई अच्छी बातों को याद करना चाहते हैं तथा यह कामना करते हैं कि अन्धकार के दिन, जिनसे शायद हम बाहर निकल चुके होते हैं, फिर कभी नहीं आयें।

विश्व के लगभग सभी महान पुरुषों को भिन्न-भिन्न अनुभव हुए होंगे। जब हमें उनके बारे में पता चलता है, खासकर पुस्तकों के अध्ययन द्वारा, तब वे हमें प्रभावित करते हैं। अनजाने में, वे हमारे जीवन में मोड़ के बिन्दु हो सकते हैं।

ऐसी घटनाओं पर वर्ष २००६ के प्रथम अंक से एक नई शृंखला के आरम्भ की घोषणा करते हुए हमें गर्व है। आशा करते हैं कि यह ८ साल से ८० साल तक के बच्चों के लिए रोचक और शिक्षाप्रद होगी।

हम उचित ही स्वामी विवेकानन्द के जीवन की कुछ घटनाओं को याद करते हुए शृंखला का आरम्भ करते हैं जिनका जन्मदिन १२ जनवरी को पूरे भारत में युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे पुनरुत्थानशील भारत की आत्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं। वर्णित घटनाएँ दर्शाती हैं कि कैसे किसी घटना का महत्व बदल सकता है यदि हम उसके प्रति अपनी मनोवृत्ति बदल लेते हैं। हम आशा करते हैं कि महान पुरुषों के जीवन की ऐसी घटनाएँ रोचक और शिक्षाप्रद साबित होंगी।

सम्पादक : विश्वम

पाठकों के लिए एक पन्ना

अपने पाठकों की चिर अभिलाषा को देखते हुए हम उनके लिए एक पृष्ठ निर्धारित करने जा रहे हैं जिसमें वे पत्रिका की अन्तर्वस्तु के बारे में अपने विचार प्रकट कर सकते हैं और सुधार के लिए सुझाव दे सकते हैं। इस पृष्ठ के माध्यम से हमें रचनात्मक समालोचना की अपेक्षा रहेगी यद्यपि हम पात्रता के अनुसार कुछ प्रशंसात्मक शब्दों के विरुद्ध भी नहीं है। पत्र संक्षिप्त और प्रसंग के भीतर हो और पठनीय अक्षरों में लिखा हो। कृपया अपना पूरा नाम और पता पिन कोड़ के साथ लिखें।

इनफोसिस, बंगलोर की श्रीमती सुधा नारायण मूर्ति से हाल में प्राप्त एक पत्र के साथ इस पृष्ठ को आरम्भ करते हुए हमें विशेष रूप से प्रसन्नता हो रही है :

चन्दामामा ने मुझे गन्धर्वों, यक्षों, देवों और राक्षसों के एक भिन्न संसार की कल्पना करने के लिए प्रेरित किया है। इसने हमें समृद्ध भारतीय परम्परा और देश के भिन्न-भिन्न भागों की लोक कथाओं का ज्ञान भी दिया है। जब उन दिनों में टी.वी. या विडियो नहीं थे तब मेरे पूरे बाल्य काल में मनोरंजन का एक मात्र साधन पढ़ना था। इसीलिए हर महीने मैं इसकी सुन्दर कहानियों के साथ रंगीन चित्रों के लिए चन्दामामा की प्रतीक्षा किया करती थी। इसमें न केवल हम लोगों की अपनी कहानियाँ बल्कि अनेक देशों की कहानियाँ भी होती थीं।

चन्दामामा में न सिर्फ पढ़ने की अच्छी सामग्री होती है बल्कि उनमें कहानी के देशकाल के अनुसार मानव मूल्यों की व्यवस्था को भी प्रतिबिम्बित किया जाता है। उदाहरण के लिए एक कहानी थी - 'सुजिइन्दा सौभाग्य' - सूई के द्वारा सौभाग्य, जिसमें कृतज्ञाता तथा ईमानदारी की चर्चा की गई है। ऐसी कहानियाँ उन दिनों न केवल मनोबल को बल प्रदान करती थीं बल्कि कुछ ऐसे जीवन मूल्यों के साथ जीवन में आगे बढ़ने में सहायता भी करती थीं। मैं आशा करती हूँ कि मेरे समवयस्क मेरे विचार से सहमत होंगे। हो सकता है इसी कारण हम लोग अपने कुछ विचारों को नयी पीढ़ी तक पहुँचा पाते हैं।

अभी भी, मैं चन्दामामा को उसी उत्कंठा के साथ पढ़ने के लिए लालायित रहती हूँ, जैसी दशकों पूर्व रहती थी और फिर कुछ ही क्षणों में मैं अपने बचपन में लौट कर चन्दामामा पढ़ने लग जाती हूँ। मुझे अनेक कहानियों की स्पष्ट स्मृति है, जैसे—चोरों के बारे में अरब की कहानियाँ, बेताल कथाएं, तीन राजकुमारों की कथा, कंचिना कोटे इत्यादि। कहानियाँ अभी भी उतनी ही रंगीन और आकर्षक हैं।

प्रतिभाशाली बाल लेखकों को आमन्त्रण

(१६ वर्ष से कम)

अप्रैल २००६ से आरम्भ होनेवाली साहित्यिक यात्रा के लिए, तुम कहानियाँ और हास्य रचनाएँ भेज सकते हो। केवल तुम्हारी अपनी मातृ-भाषा में लिखित मौलिक रचनाओं पर ही विचार किया जायेगा।

निर्देश:

कहानियाँ : ग्रामीण पृष्ठभूमि के साथ मौलिक कथानक; २५० शब्दों से अधिक नहीं। पुराणों की कथाओं, पशुपक्षियों की कथाओं, नीतिकथाओं, लोक कथाओं, परीकथाओं के पुनर्लेखन पर विचार नहीं किया जायेगा।

हास्य रचनाएँ : हास्य घटनाओं तथा सम्वादों का स्वागत है। एक बार में तीन से अधिक न भेजो।

- सभी प्रविष्टियाँ माता-पिता के द्वारा प्रमाणित हों कि वे मौलिक हैं तथा बिना किसी की मदद के लिखी गई हैं।
- स्वीकृत प्रविष्टियों में आवश्यकतानुसार सम्पादकीय संशोधन किया जायेगा।
- पूरा डाक-पता भेजो। लिफाफे पर लिखो, ''साहित्यिक यात्रा'' या 'लिटररी फ़े' अ।
- स्वीकृत और मुद्रित रचनाओं के लिए निम्नलिखित राशि दी जायेगी: कहानी- एक सौ रु.; हास्य रचना: पचास रु.
- रचनाओं के विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा। अस्वीकृत रचनाएँ, यदि पता लिखा टिकट के साथ लिफाफा साथ भेजें तो लौटा दी जायेंगी।
- अप्रैल २००६ अंक के लिए अन्तिम तिथि ३१ जनवरी २००६। इसके बाद के अगले अंकों के लिए हर महीने की अन्तिम तारीख।

Mail your entries to :

Editor, Chandamama, CHANDAMAMA INDIA LIMITED,
82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

गजलक्ष्मी-गुंजा

रंगनाथ भूस्वामी था। साथ ही वह शहर में कुछ व्यापार चलाता था। उसके बारे में लोग कहा करते हैं कि वह घर के नौकरों की अच्छी देखभाल करता थे और उन्हें ठोस बेतन भी देता है। लोग उसके यहाँ नौकरी करने के लिए पर्याप्त उत्साह दिखाते थे।

प्रमोद, रंगनाथ के यहाँ नौकरी करता था। उसे अपने भाई की सहायता करने दूर देश जाने की नौबत आयी। रंगनाथ की दृष्टि में प्रमोद के बाद उतना ही दक्ष है, चंद्र। इसीलिए वह चाहता था कि यह नौकरी उसे दी जाए। परंतु, यह कहते हुए उसकी पत्नी ने उसे रोका, ''देखिये, मेरे भाई शिव को यह काम सौंप दीजिये और निश्चिंत हो जाइये। वह उससे भी अधिक योग्य व्यक्ति को नौकरी पर लगायेगा।''

ख़बर पाते ही रंगनाथ का साला शिव वहाँ पहुँच गया और रंगनाथ से कहने लगा, ''मेरा परिचित हरि आपके प्रमोद से भी कई गुना अधिक निपुण है। उसका काम करने का तरीका ही अनोखा है। सब प्रकार से समर्थ है।''

रंगनाथ ने फ़ौरन कहा, ''किसी भी निर्णय को लेने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिये। उनकी जानकारी के बिना ही मैं नौकरों की तरह-तरह से परीक्षा लेता हूँ। कुछ लोग सफल हो पाते हैं, कुछ ही कामों में, परंतु प्रमोद हर काम में सफल होता है। इसीलिए उसे मैं बहुत चाहता हूँ। उसपर मेरा विशेष प्रेम है।'' फिर उसने प्रमोद से संबंधित चंद विशेषताएँ बतायीं।

प्रमोद शहर में रंगनाथ के कपड़ों की दुकान में काम करता था। प्रमोद की कार्य-दक्षता के कारण रंगनाथ अधिकाधिक लाभ कमाता था। रंगनाथ को मालूम हुआ कि बहुत-से व्यापारी अधिक बेतन देने का लोभ देकर उसे लुभाने की कोशिश कर रहे हैं। पर प्रमोद ने उनके प्रस्ताव

को साफ़-साफ़ ठुकरा दिया। रंगनाथ जानना चाहता था कि इसमें सच और झूठ क्या है, इसीलिए असलियत जानने के लिए उसने विश्वासपात्र बापट को यह ज़िम्मेदारी सौंपी।

बापट, प्रमोद से मिला और बोला, ''रंगनाथ तुम्हें हर मास हज़ार रुपये दे रहा है। मैं दो हज़ार रुपये दूँगा। मैं कपड़ों की एक नयी दुकान खोलने जा रहा हूँ। क्या उसमें काम करोगे?''

प्रमोद ने ''न'' के भाव में सिर हिलाते हुए कहा, ''महाशय, ऐसे भी लोग हैं, जो तीन हज़ार रुपये देने का वादा कर रहे हैं। लेकिन मैंने उन्हें भी अस्वीकार कर दिया।''

बापट ने उसपर दया दिखाते हुए कहा, ''अपनी शक्ति से अधिक दान-धर्म करना नहीं चाहिये। मैं तुम्हें चार हज़ार रुपये दूँगा। उस रंगनाथ के साथ ही रहोगे तो तुम ज़िन्दगी में तरक्की नहीं कर सकते। जहाँ हो, वहीं रहोगे।''

प्रमोद इसपर हँस पड़ा और बोला, ''महाशय, जो दूरदृष्टि रखता है, उसके लिए वेतन से बढ़कर उसका मालिक है। उनके व्यापार को बरबाद करने के लिए ही कुछ लोग मुझे अधिक वेतन देने का लोभ दे रहे हैं। जब उनका यह ध्येय पूरा हो जायेगा, तब मुझे अपना रास्ता नापने के लिए कहेंगे। मुझे पूरा बिश्वास है कि रंगनाथजी मेरी आवश्यकता पर मेरी मदद करेंगे।''

बापट ने रंगनाथ को पूरा विषय बताया। वह बेहद खुश हुआ। इसके दूसरे ही दिन प्रमोद की छोटी बहन की शादी का रिश्ता तय हुआ। शादी होने में हालांकि और तीन महीने बाकी थे, पर दुल्हेवालों ने फ़ौरन हज़ार रुपयों की माँग पेश की। प्रमोद के पास धन तो था नहीं, इसीलिए उसने रंगनाथ से सहायता माँगी।

रंगनाथ की इच्छा थी कि प्रमोद की पुनः परीक्षा ली जाए। दुख प्रकट करते हुए उसने कहा, ''एक महीने तक किसी को भी कर्ज न देने का निर्णय लिया।'' यह कह कर उसने उसे दो हज़ार रुपये देते हुए कहा, ''मैंने यह धन एक विशेष काम के लिए छिपा रखा है। यह रहस्य भरा काम है। दो महीनों तक इसे अपने पास महफ़ूज़ रखो। इसमें से पैसा भी खर्च करने की ग़लती मत करना।'' उसने उसे सावधान किया।

प्रमोद मौन ही रहा और धन-राशि लेकर जब घर लौटने लगा, तब बापट रास्ते में उससे फिर

मिला, "मैंने सुना कि तुम्हें धन की सख्त ज़रूरत है। यह भी मालूम हुआ कि रंगनाथ तुम्हारी सहायता करने को तैयार नहीं है। अब भी सही, अपने को संभालो और मेरे यहाँ नौकरी पर लग जाओ।"

प्रमोद ने उसे नख से शिख तक देखा और कहा, "मैं समय-समय पर अलग-अलग बात करने का आदी नहीं हूँ। एक बार जो बताता हूँ उसी पर डटा रहता हूँ। मेरी दृष्टि में रंगनाथ ही अच्छे मालिक हैं।"

शिव ने रंगनाथ की बातें सुनने के बाद कहा, "यदि प्रमोद व्यापार में इतना दक्ष है तो आपकी और बापट की परीक्षाओं के मर्म को समझने की शक्ति क्या उसमें नहीं है? मैं तो समझता हूँ कि आपने उसे अच्छा प्रतिफल दिया होगा। उसने आपकी कमज़ोरी का ठोस फायदा उठाया होगा।"

इसपर रंगनाथ ने हँसते हुए कहा, "अब प्रमोद की बात छोड़ो। जिस व्यक्ति को तुम प्रमोद के स्थान पर रखना चाहते हो, उसकी तुमने क्या-क्या परीक्षाएँ लीं?"

शिव ने तुरंत कहा, "अलग परीक्षाओं की कोई ज़रूरत नहीं है। मेरी पत्नी हर एक के घर जाती है और तहक़ीकात करती है। यह उसकी आदत है। किसी भी घर में जाकर पूछो, सब औरतें यही कहा करती हैं कि मेरा पति छोटी-सी बात पर भी नाराज़ हो उठता है और वह किसी न किसी प्रकार उसे संभाल लेती है। परंतु हरि की पत्नी ही एक मात्र स्त्री है, जो पति की भरपूर प्रशंसा करती है। हरि अच्छा व्यक्ति है, यही एक लाजवाब सबूत है।"

रंगनाथ को साले का जवाब सही नहीं लगा। पर उसकी पत्नी ने अपने भाई का समर्थन करते हुए कहा, "उसकी बात का आप विश्वास नहीं करते हों तो आप इससे बड़ी परीक्षा ले लीजिये।

रंगनाथ ने इस विषय में प्रमोद की सलाह माँगी। उसने थोड़ी देर तक सोच-विचार करने के बाद कहा, "हरि जब अपने घर में नहीं होगा, तब हम उसके घर जायेंगे। हरि के बारे में उसकी पत्नी से आवश्यक जानकारी प्राप्त करेंगे।"

फिर वे दोनों हरि के घर गये। प्रमोद ने उससे कहा, "मैं रंगनाथ के कपड़ों की दुकान में लंबे अर्से से काम करता आ रहा हूँ। चूँकि मुझे भाई की सहायता के लिए जाना है, इसीलिए मुझे यह

नौकरी छोडनी पड़ रही है। रंगनाथ जी चाहते हैं कि मेरी जगह पर आपके निकट रिश्तेदार चंद्र की नियुक्ति हो। उसके बारे में आप जो जानती हैं, उसे सुनने हम यहाँ आये हैं।''

गजलक्ष्मी ने अपना गला साफ़ करते हुए कहा, ''उस चंद्र के बारे में क्या कहूँ। वह शराबी है, भ्रष्टाचारी है और झूठा है। आजकल वह मेरे पति से बात भी नहीं करता,'' बिना सकपकाये उसने कह डाला।

''बहुत खुश हुए । हमारे लिए बहुत ही उपयोगी जानकारी आपने दी।'' प्रमोद ने कहा और फिर दोनों वहाँ से चल पडे।

रास्ते में प्रमोद ने, रंगनाथ से कहा, ''कहावत है कि गुंजा अपना कालापन नहीं जानती। मेरी दृष्टि में गजलक्ष्मी का पति शराबी और भ्रष्टाचारी है। चूँकि हम चंद्र के बारे में जानते हैं, इसीलिए यह साफ़ हो गया कि गजलक्ष्मी की कही बातों से सच्चाई नहीं है।''

''पर तुम कैसे कह सकते हो कि हरि इन दुर्व्यसनों का शिकार है?'' रंगनाथ ने पूछा।

''मालिक, राजा पांडु ने जब अपने पुत्र धर्मराज से पूछा कि जिन-जिन लोगों को वह जानता है, उनमें से कौन अच्छे और कौन बुरे हैं तो तुरन्त उन्होंने कहा कि सब के सब अच्छे हैं और कोई भी बुरा नहीं है। जब दुर्योधन से यही प्रश्न पूछा गया तो उसने कहा कि मुझे तो किसी में भी अच्छाई दिखायी नहीं देती। आपने यह कहानी ज़रूर सुनी ही होगी।'' प्रमोद ने कहा।

रंगनाथ ने फ़ौरन प्रमोद के हाथ पकड़ लिये और कहा, ''तुम्हारे विषय में मुझे एक संदेह है। इतने अक़्लमंद हो, पर क्यों स्वयं व्यापार नहीं करते? मेरे यहाँ नौकरी क्यों करते रहे?''

प्रमोद ने कहा, ''सब भूमि एक समान है, पर फलों के पेड़ फल देते हैं, फूलों के पेड़ फूल। इसी प्रकार किसी की अक़्लमंदी व्यापार में काम आती है तो मेरी अक़्लमंदी सही मालिक को चुनने में।''

रंगनाथ ने, प्रमोद के विवेक की प्रशंसा की और एक हफ्ते के अंदर ही चंद्र को अपने कपड़ों की दुकान में नियुक्त किया।

गरुड़
अपराजेय
तुम्हारी प्रिय पत्रिका चन्दामामा में २००१–२००३ में
प्रकाशित लोकप्रिय चित्रकथा का शेष भाग....
तुम्हारी जिज्ञासा को मात्र बढ़ाने के लिए:चन्द्रपुरी के
कत्ल कर दिये गये मंत्री के पुत्र आदित्य को विरासत में
रहस्यमय शक्तियों के साथ गरुड़ की एक मूर्ति और
पंख मिलते हैं। इन दोनों की मेहरबानी से राज्य में शान्ति भंग
करने की कोशिश करनेवाली शैतानी ताकतों पर काबू पाने में वह
कामयाब हो जाता है। अब वह युवराज है। उसे पता
चलता है कि शैतानी ताकतें फिर से सिर उठाने लगी हैं।
अगले अंक से राजकुमार आदित्य के साहसिक
कारनामों के बारे में पढ़िये। अपनी प्रति
सुनिश्चित कर लीजिये और अपनी वार्षिक
सदस्यता का नवीनीकरण करना न भूलें।
लिखें:
चन्दामामा इन्डिया लिमिटेड
८२, डिफेन्स आफिसर्स कॉलोनी
इक्कातुथंगल, चेन्नई-६०० ०९७.
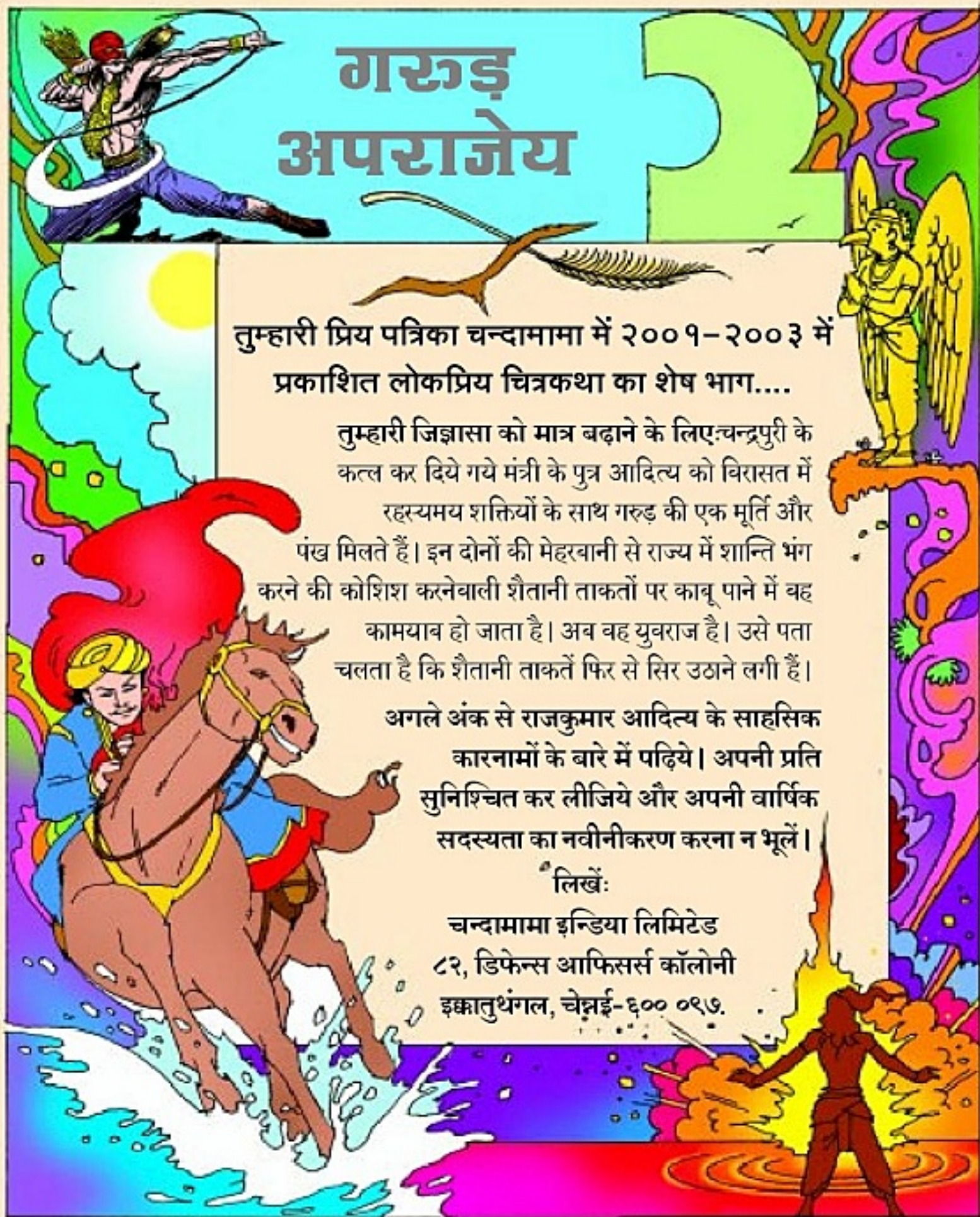
भयंकर घाटी

5

(विचित्र जन्तु के रूप में आये हुए मान्त्रिक के शिष्य जयमल्ल के मुख से केशव ने बहुत सी बातें जान लीं। ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक ने केशव को बताया कि वह अपनी मन्त्र-शक्ति से भूकम्प लाया था। फिर उसने अपने शिष्य को बुलाकर आज्ञा दी कि वह केशव को हाथियों के झरने में स्नान करवाकर लाये। बाद में–)

ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक की आज्ञा सुनते ही जयमल्ल, केशव का हाथ पकड़कर, वहाँ से चला। केशव चलते-चलते सोच रहा था- 'यह सब देख मुझे अचरज हो रहा है। यह कैसे विश्वास किया जाये कि वह अपनी मन्त्र-शक्ति से इतने बड़े पहाड़ हो हिला सका।'

''उसकी मन्त्र-शक्ति के कारण भूकम्प आया, मैं नहीं विश्वास करता। मुझे सन्देह है कि पहाड़ में कुछ बिस्फोटक धातुएँ थीं। इनके कारण, हो सकता है, कभी-कभी पहाड़ फूट पड़ता हो। तब यह सम्भव है कि मान्त्रिक शेखियाँ मारता हो कि वह सब उसके कारण ही हुआ है। इन सब का क्या कारण है, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।'' उसने कहा।

तब तक वे पहाड़ में एक ऐसी सपाट जगह पहुँच गये थे, जहाँ पास में एक झरना भी था। वे झरने के पास आये ही थे कि उसके पास की गुफा में से एक शेर ने गर्जन किया। उसके बाद

अपने सिर के बाल हिलाता वह गुफ़ा से बाहर निकला और ज़ोर से गरजता एक पत्थर पर चढ़कर खड़ा हो गया।

''यही हाथियों का झरना है और जो शेर गुफ़ा में रहता है, वही दागोंवाला शेर है।'' जयमल्ल कहता-कहता ज़ोर से हँसा।

''सभी कुछ यहाँ आश्चर्यमय है। पहाड़ का हिलना, पालतू बिल्ली की तरह शेर को पालना और वह भी चीते के निशानवाला शेर, जो अनहोनी बात लगती है। कहीं ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक ने मुझे इसी शेर के लिए आहार बनाकर तो नहीं भेजा है?'' सन्देह करते हुए, केशव ने जयमल्ल की ओर देखा। जयमल्ल सिर उठाकर दागोंवाले शेर की ओर देख रहा था। शेर पंजा उठा-उठाकर ज़ोर-ज़ोर से गरज रहा था।

केशव ने कुछ देर तक गौर से शेर की ओर देखा। उसे लगा कि वह किसी क्षण उस पर कूद सकता है।

केशव ने यह सोचते-सोचते धनुष पर बाण चढ़ाकर शेर की ओर निशाना लगाया। वह बाण छोड़नेवाला ही था कि जयमल्ल ने ''ओंकारी, ओंकारी'' कहता, केशव की ओर मुड़कर कहा, ''अरे, तुम क्या करने जा रहे हो? तुम सोच रहे हो कि तुम इस शेर को बाण से मार सकते हो? मैं मन्त्र पढ़कर, उसका मुख बन्द करने जा रहा हूँ। फिर भी देखें, बाण छोड़ो। क्या होता है?''

केशव ने शेर के सिर पर बाण छोड़ा। बाण साँय-साँय करता, उसके सिर पर लगा और घूमता-घूमता हवा में उठा और पासवाले झरने में गिर गया।

''देखा, तुम्हारा एक बाण बेकार हो गया और शेर का कुछ भी न हुआ। यह ब्राह्मदण्डी का पालतू शेर है। वह कहा करता है कि उसने ऐसा दागोंवाला शेर खुद बनाया है, जो संसार में कहीं और नहीं है। पर मैं विश्वास नहीं करता। वह मान्त्रिक ही तो है, ब्रह्मा तो नहीं है। इसे उसने जब वह बच्चा ही था, तब पकड़ लिया होगा और इस पर उसने चीते की खाल जोड़ दी होगी। यह मेरा सन्देह है।'' जयमल्ल ने कहा।

''यह असम्भव है, यदि एक जन्तु की खाल को, दूसरे जन्तु की खाल पर जोड़ दिया जाये, तो उसकी अपनी खाल से वह कैसे मिल सकती है? तुम तो निरे नादान मालूम होते हो।'' केशव ने कहा।

"तो, शायद उसने यह किया हो, जब यह मिला होगा, तभी उसने इसके शरीर पर जला कर दाग कर दिये होंगे।" जयमल्ल ने कहा।

"हाँ, यह ज़रूर हो सकता है। मगर इन सब बातों की ज़रूरत ही क्या है? इस शेर के कारण मुझ पर तो कोई ख़तरा नहीं आनेवाला है, यह पहले बताओ।" केशव ने ऊबकर पूछा।

"ख़तरा तो कुछ नहीं है। इतने दिनों से मान्त्रिक का शिष्य हूँ, क्या मैं इतनी भी मन्त्र-शक्ति नहीं जानता हूँ कि जानवरों को मन्त्रों से वश में कर सकूँ? देखा, उसे मैंने कैसे वश में कर लिया है? अब थोड़ी देर में वह बिल्ली की तरह पेट के बल लेट जायेगा।" जयमल्ल ने कहा।

देखते देखते शेर ने गले के बाल हिलाये। इस तरह मुख खोला, जैसे अंगड़ाई ले रहा हो, फिर बिल्ली की तरह पत्थर पर लेट गया। केशव, जयमल्ल की मन्त्र-शक्ति देखकर मुग्ध हो गया। वह सोचने लगा- 'यह तो खुद ही बहुत बड़ा मांत्रिक लगता है, फिर ब्राह्मदण्डी का शिष्य क्यों बना हुआ है। क्या वह ब्राह्मदण्डी से और मंत्र-शक्ति लेना चाहता है? इसके साथ रहने का इसका क्या उद्देश्य हो सकता है? यह भी अपने गुरु से पिंड छुड़ाना चाहता है, लेकिन फिर भी इसकी क्या लाचारी है कि वह यहाँ से जाना नहीं चाहता। जो भी हो, यदि यह सचमुच मेरा मित्र है, तो इसकी मदद से ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक के चंगुल से आसानी से निकला जा सकता है।'

जयमल्ल ने हाथियों के झरने में कई बार
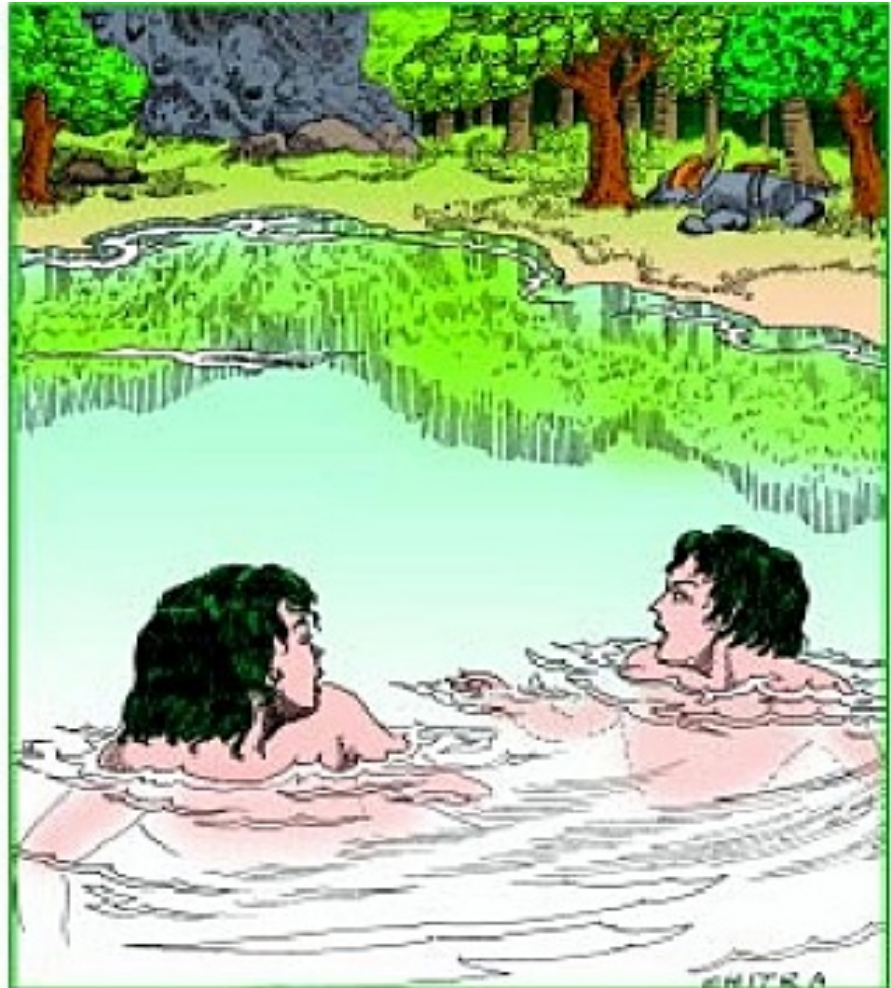
डुबकियाँ लगाईं। "अरे देख क्या रहे हो? केशव उतरो, नहाओ। हमारे लिए ब्राह्मदण्डी प्रतीक्षा कर रहा होगा।"

केशव धनुषबाण किनारे पर रखकर झरने में उतरकर नहाने लगा। नहाकर शुद्ध होने के बाद, उसे लगा कि मान्त्रिक कालभैरव को उसे बलि दे देगा।

केशव ने अपने सन्देहों के बारे में जयमल्ल से पूछना चाहा। परन्तु जयमल्ल तब तक झरने में तैरता-तैरता बहुत दूर चला गया था। केशव धीमे-धीमे तैरता उसके पास गया। अपने भय के बारे में पूछने के लिए होंठ खोले ही थे कि झरने के उस तरफ से पत्थरों के लुढ़कने के साथ, हाथियों का चिंघाड़ना सुनाई दिया।

"लगता है कि हाथियों का झुण्ड झरने के

पास आ रहा है।'' केशव ने कहा।

''इसका नाम ही हाथियों का झरना है। तब इसमें नहाने के लिए हाथी न आयेंगे, तो और कौन आयेगा?'' जयमल्ल ने ज़ोर से हँसते हुए कहा।

''अगर यही बात है, तो चलो, यहाँ से जल्दी भाग जायें। यदि वे आ गये, तो हम उनके पैरों के नीचे मिट्टी-मिट्टी हो जायेंगे।'' केशव जल्दी-जल्दी किनारे की ओर तैरने लगा।

जयमल्ल, केशव का भय देखकर ज़ोर से हँसा। इतने में कुछ हाथी, एक दूसरे को रगड़ते हुए, सूँडों से झरने के पास के पेड़ों को तोड़ते हुए झरने के पास आये। उनको देखते ही जयमल्ल ने डुबकी लगाई। फिर ऊपर उठकर उसने कोई मन्त्र पढ़ा। फिर उनकी ओर उसने कुछ कीचड़ फेंकी। तुरंत आगे आते हुए हाथी और उनके पीछे आनेवाले हाथी, जहाँ-जहाँ थे, वहीं पथरा गये।

''देखी हमारी शक्ति!'' जयमल्ल केशव को देखकर ज़ोर से चिल्लाया। फिर वह धीमे-धीमे तैरता केशव के पास आया। केशव के आश्चर्य की सीमा न थी। उसने सोचा कि हो न हो, जयमल्ल बड़ा मान्त्रिक है।

जैसे उसने केशव के मन की बात जान ली हो, जयमल्ल ने सिर हिलाकर कहा, ''भूत, जन्तुओं और पक्षियों को बश में कर लेना कोई बड़ी शक्ति नहीं है। इस तरह की छोटी मोटी बातें, ब्राह्मदण्डी बिना हाथ पैर हिलाये कर सकता है। मंत्र-शक्ति की सामर्थ्य की कोई सीमा नहीं। मंत्र-शक्ति से मनुष्य पूरी प्रकृति का मालिक बन सकता है।

रात-दिन, आकाश-पाताल की सृष्टि कर सकता है। भूत-भविष्य का ज्ञान अर्जित कर सकता है। गुप्त से गुप्त रहस्य को जान सकता है। सच तो यह है कि भयंकर घाटी में जाकर जिस दिन हम वहाँ के ख़जानों को ले सकेंगे, उसी दिन हम अच्छे मन्त्रवेत्ता हो सकते हैं।''

''वह भयंकर घाटी कहाँ है?'' केशव ने पूछा।

''यदि यही मालूम हो जाये, तो और जानने के लिए रह ही क्या जाता है? वह जानने के लिए ही तो, मैं ब्राह्मदण्डी की इतने दिनों से सेवा कर रहा हूँ।'' जयमल्ल ने कहा।

यह सुन वह जान गया कि क्यों जयमल्ल की मान्त्रिक से नहीं पटती। उस भयंकर घाटी में ख़ज़ानों को पाने के लिए ही शायद वे मेरा उपयोग करना चाहते हैं।

जयमल्ल ने ऊपर के कपड़े से अपना शरीर पोंछकर केशव की ओर मुड़कर कहा, ''अरे, जल्दी करो, चलो, चलें।'' केशव जल्दी-जल्दी शरीर पोंछकर, धनुष-बाण लेकर उसके पीछे चला। जयमल्ल ने दो कदम आगे रखे। फिर उसने कहा, ''यदि वह हाथियों का झुण्ड मर गया तो हमें क्या मिलेगा?'' उसने पीछे मुड़कर कोई मन्त्र पढ़ा, तालियाँ बजाकर कहा, ''हाथियो! अब तुम झरने में नहा सकते हो।''

हाथी इस तरह आगे बढ़े जैसे किसी ने आज्ञा दी हो, झरने में जा कूदे।

जयमल्ल ने एक कंकड़ उठाकर, दागोंवाले शेर की ओर फेंककर कहा, ''अब तुम भी अपना गर्जन

प्रारम्भ कर दो।'' तुरंत शेर पत्थर पर जा खड़ा हुआ और इतने ज़ोर से गरजने लगा कि उनके कान फट से गये। उसका गर्जन सुन झरने में नहानेवाले हाथी भी चिंघाड़ने लगे।

''जब कभी मैं झरने में नहाने आता हूँ, तब यही होता है। हाथी और शेर घंटों इस तरह गरजते-चिंघाड़ते रहते हैं, फिर वे अपने अपने शिकार पर चले जाते हैं।'' जयमल्ल ने सन्तुष्ट होकर कहा।

जयमल्ल का रुख केशव को अखर-सा रहा था। थोड़ी देर में मान्त्रिक के कारण उस पर आपत्ति आनेवाली थी। पर जयमल्ल को इसकी कुछ भी परवाह न थी। और तो और, वह इस तरह खुश हो रहा था, जैसे कोई बड़ा काम कर दिया हो। और फिर भी कहता है कि वह मेरी रक्षा

करेगा और वह मेरा हित चाहता है, मुझ पर कोई खतरा नहीं आने देगा।

"तुमने कहा था कि आज से हम दोनों दोस्त हैं। परन्तु जो आपत्ति मुझ पर आनेवाली है, उससे मेरी रक्षा करने के लिए तुम कुछ सोचते करते नहीं मालूम होते।" केशव ने कहा।

जयमल्ल ने सिर उठाकर पहाड़ की चोटी की ओर देखा। उसने देखा कि वहाँ एक बड़े पत्थर के सहारे खड़ा-खड़ा ब्राह्मदण्डी उनकी ओर देख रहा है । तुरंत जयमल्ल ने केशव को सावधान करते हुए कहा, "तुम इतने ज़ोर से बातचीत न करो। उसके कान बड़े तेज़ हैं। तुम्हारी रक्षा करना मेरे लिये बड़ा आवश्यक है। भयंकर घाटी में जाने के लिए कौन योग्य है, यह मैं भी ब्राह्मदण्डी के साथ आज ही जान सका। तुमने स्वयं ही देखा था कि तुम्हारे कन्धे पर के साँप का निशान देखकर वह कितना खुश हुआ। लगता है कि भयंकर घाटी में प्रवेश की योग्यता से इस निशान का गहरा सम्बन्ध है। और इस रहस्य की जानकारी सिर्फ उसी को है। आज रात तुम्हें कोई शक्ति देकर वह तुम्हारे मुख से भयंकर घाटी के मार्ग और वहाँ की निधियों के बारे में कहलवा देगा। उस जानकारी के मिलने के बाद हम ब्राह्मदण्डी को दूसरे लोक में भेज देंगे। घबराओ मत।"

"यदि हम से पहले उसने ही हमें दूसरे लोक में भेज दिया तो?" केशव ने सन्देह प्रकट करते हुए कहा।

"वह यह नहीं कर सकता। अभी उसे धन और कीर्ति के भूत पकड़ कर सता रहे हैं। इसीलिए उसमें सांकेतिक ज्ञान लुप्त हो गया है, नहीं तो वह क्यों हमें इस तरह मिल-जुलकर घूमने फिरने देता?" जयमल्ल ने कहा।

पहाड़ पर से ब्राह्मदण्डी खड़ा- खड़ा उनकी ओर देख रहा था। वह सहसा मुस्कुराया। वह चिल्लाया, "शिष्य जयमल्ल, आते -आते कुछ बलि की समिधायें आदि ले आना। कालभैरव भूख के कारण व्याकुल है। हज़ार साल में एक ही बार उपासकों के इस आराध्य को भूख लगती है।"

(अभी है)

वेताल कथाएँ

यथार्थ चित्र

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा, उसे अपने कंधे पर डाल लिया और श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''तुम्हारा वह कौन-सा संकल्प है, जिसे कार्यान्वित करने के लिए इतना कठोर परिश्रम कर रहे हो? कुछ ऐसे राजा हैं, जो अपने अधिकार-दर्प के नशे में चूर होकर अकस्मात् ही कोई न कोई निर्णय ले लेते हैं। उनके इस निर्णय के पीछे उनका क्या आशय है, यह किसी की समझ में नहीं आता। अपने नौकर-चाकरों के विषय में ही नहीं बल्कि स्वतंत्र विचारों के कलाकारों के प्रति भी इसी प्रकार का दुर्व्यवहार करते हैं। यह मालूम
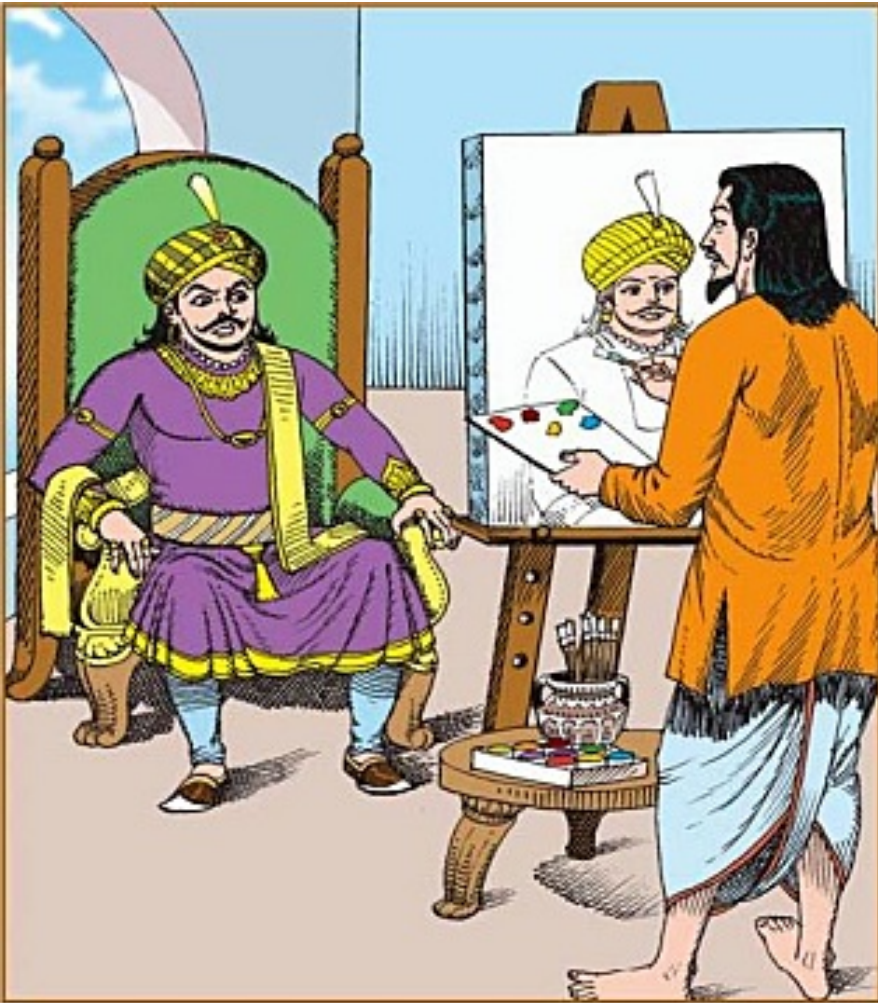
ही नहीं होता कि वे कब किसे दंड देंगे और किसका सत्कार करेंगे। राजा उग्रसिंह भी एक ऐसा ही राजा था, जिसने अमित अधिकार-दर्प के नशे में चूर होकर बिवेक रहित पारस्परिक बिरोधी निर्णय लिये। तुम्हें सावधान करने के लिए उसकी कहानी सुनाने जा रहा हूँ। ध्यान से सुनो।'' फिर बेताल यों कहने लगा:

उग्रसिंह जयंतपुर का राजा था। निस्संदेह वह एक दक्ष शासक था, परंतु जब देखो, क्रोधित ही रहता था, चाहे वह अंत:पुर में हो या दरबार में। छोटी-छोटी ग़लतियों पर भी वह लोगों को कड़ी से कड़ी सज़ा देता था।

राजकर्मचारियों को सदा इस बात का डर लगा रहता था कि पता नहीं, कब, किस कारण से उन्हें दंड मिलेगा।

एक बार उग्रसिंह में अपना चित्र बनवाने की इच्छा जगी। यह समाचार जानते ही कई चित्रकार राजधानी आने लगे। परंतु राजा ने इतने में घोषणा करवायी कि जो उसका अच्छा चित्र बनायेगा, उसे हज़ार अशर्फ़ियाँ दी जायेंगी, पर राजा को यह चित्र पसंद न आये तो चित्रकार को दस कोड़े मारे जायेंगे। चित्रकार जानते थे कि राजा हमेशा क्रोधांध रहता है, इसीलिए समर्थ चित्रकार भी पीछे हट गये।

नागबर्मा ही एक ऐसा चित्रकार था, जो राजा का चित्र बनाने के लिए तैयार हुआ। राजभवन के निकट ही उसके रहने का इंतज़ाम किया गया। राजा हर दिन चित्र बनाने के लिए उसे कुछ समय देता था। नागवर्मा ने एकाग्रता के साथ कुछ समय तक काम किया और पूरा हो जाने के बाद चित्र दरबार में ले आया।

परदा हटाने के बाद जैसे ही राजा ने चित्र को देखा, नाराज़ हो उठा और चिल्ला पड़ा, ''छी, यह भी कोई चित्र है? क्या सचमुच में तुम चित्रकार हो? यह तो मेरा चित्र ही नहीं लगता।''

सभासदों ने भी यही राय प्रकट की। उनको आश्चर्य हुआ कि इतने बड़े चित्रकार ने ऐसा चित्र कैसे बनाया।

नागवर्मा को पुरस्कार पाने की उम्मीद थी, पर उल्टे वह कोड़े से मारा गया। अपमानित होकर वह सभा से निकल गया।

कुछ दिनों के बाद विजय नामक चित्रकार राजा से मिला और बोला, ''आपका चित्र बनाने

की इच्छा लेकर आया हूँ। कृपया मुझे इसकी अनुमति दीजिये।''

''निकम्मों के सामने खड़े होकर चित्र बनवाने से मुझे बेहद चिढ़ है। अगर ठीक तरह से चित्र नहीं बनाया तो दुगुना दंड दूँगा? याने कोड़े की मार दस नहीं, बीस बार। शर्त स्वीकार है?'' राजा ने गरजते हुए पूछा।

''हाँ, स्वीकार है महाराज,'' विजय ने कहा। वह उसी दिन काम पर लग गया। हफ्ते भर में उसने चित्र बना दिया, और दरबार में सिंहासन पर आसीन राजा के पास ले आया।

उस चित्र को देखकर राजा क्रोधित हो गया और कहने लगा, ''क्या मैं इतना क्रूर हूँ, तुम्हारा यह साहस?''

''क्षमा कीजिये महाराज, आपका यथार्थ चित्र बनाना ही मेरा एकमात्र उद्देश्य है। एक हिरन पानी पीते समय भी घबराता रहता है और भय के मारे परिवेशों को देखता रहता है। बाघ प्रशांत होकर जब बैठा रहता है, तब भी उसकी आँखों में लालिमा भरी रहती है और वह भयंकर लगता है। ये उनके सहज लक्षण हैं। चित्रकार को किसी भी हालत में उस सहजता को भुलाना नहीं चाहिये।'' विजय ने सविनय कहा।

''इसका यह मतलब नहीं कि मुझे इतना क्रूर दिखाओ। अगर मैं चाहूँ तो तुम्हारा सिर धड से अलग कर सकता हूँ।'' राजा ने हुंकार भरते हुए कहा।

''जानता हूँ, महाराज। परंतु सच्चा कलाकार

सदा सत्य ही कहता है। जो सत्य में विश्वास रखता है, उसे भय छू भी नहीं सकता। फिर भी, मेरी एक छोटी-सी विनती है। आप किसी निर्णय पर आयें, उसके पहले इस चित्र को सभासदों को दिखाने की अनुमति दीजिये। कृपया उनकी भी राय लीजिये।''

राजा ने सभासदों को संबोधित करते हुए कहा, ''क्या यह चित्र मुझ जैसा है?''

चित्र, चूँकि बिलकुल ही क्रोध में खड़े राजा जैसा ही था, इसीलिए सभासद इनकार न कर सके। परंतु वे मौन रह गये, क्योंकि 'हाँ' कहने से वे डरते थे।

तब वृद्ध मंत्री ने गंभीर स्वर में कहा, ''महाराज, इस चित्र को इस प्रकार से चित्रित करने के औचित्य के बारे में तो कह नहीं सकता, पर यह

चित्र हू ब हू आप का ही लगता है। आपके रूप के साथ- साथ, आपके हाव-भाव, आपके सहज लक्षण, आपका व्यक्तित्व इसमें स्पष्ट गोचर होते हैं।'' मंत्री के कथन का समर्थन करते हुए सभासदों ने तालियाँ बजायीं।

एक क्षण भर के लिए राजा चौंक उठा। उसने तुरंत विजय को हज़ार अशर्फियाँ दीं और उस चित्र को अपने कमरे में रखवाया।

राजा हर दिन नींद से उठते ही उस चित्र को एक बार ध्यान से देखता था। उस चित्र में उसे जैसा क्रोधी व विकृत दिखाया गया है, ऐसा न दिखूँ, इसकी कोशिश करने लगा। शांत रहने व दिखने के प्रयत्नों में लग गया। कभी नाराज़ हो उठा भी तो वह उस चित्र की याद करने लगा, जिससे वह विनम्र और सौम्य होने लगा। यों उसका उबलता क्रोध एकदम ठंडा पड़ गया। उसने विजय को एक बार और बुलाया और अपने चित्र को चित्रित करने का आदेश किया।

विजय ने कहा, ''महाराज, अब आपके चित्र को बनाना है, नागवर्मा को, मुझे नहीं। आप अगर अनुमति देंगे तो वह आपका चित्र अद्भुत रूप से बनायेगा। उसके पहले के चित्र को ही लीजिये, उसे एक और बार देखेंगे तो उसमें आप अपना प्रशांत गांभीर्य व चित्रकार का अद्भुत कला-नैपुण्य स्वयं देख सकेंगे।''

साथी कलाकार के प्रति विजय ने जो प्रेम व आदर दर्शाया, उसके लिए राजा ने विजय का अभिनंदन किया और नागवर्मा के चित्र को मंगाकर देखा। नागवर्मा के अद्भुत कला–नैपुण्य की प्रशंसा करते हुए उसे बुलवाया और उसे आस्थान चित्रकार के पद पर नियुक्त किया। उसका सत्कार भी किया।

बेताल ने कहानी सुना चुकने के बाद कहा, ''राजा उग्रसिंह पहले नागवर्मा पर बहुत ही क्रोधित हुआ, क्योंकि उसकी दृष्टि में उसका बनाया चित्र बहुत ही भद्दा और उसका अपमान करनेवाला था। पर उसने फिर से अपना चित्र बनाने के लिए नागवर्मा को बुलाया। यहाँ हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उसने इस अपराध के लिए उसे कड़ी सज़ा भी दी थी। ऐसे नागवर्मा को अपने आस्थान का चित्रकार बनाया और यहाँ तक कि उसका सत्कार भी किया। क्या तुम्हें यह विचित्र नहीं लगता? ये उसमें भरे निरंकुश स्वभाव, व

विवेकहीनता के परिचायक नहीं? इससे क्या यह स्पष्ट नहीं होता कि दोनों कलाकारों के चित्रों में कौन-सा बेहतर है, इसका वह निर्णय नहीं कर पाया, इसीलिए उसने दोनों चित्रकारों का सत्कार किया? मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारा सिर टुकड़ों में फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने कहा, ''राजा उग्रसिंह पहले क्रोधी स्वभाव का अवश्य था, पर, बाद में जो घटनाएँ घटीं, वे उसमें परिवर्तन ले आयीं। उसने विजय को भी कठोर दंड देना चाहा। किन्तु वृद्ध मंत्री तथा सभासदों के अभिप्रायों को वह टाल नहीं सका। उसे विजय को भेंट देनी ही पड़ी। जब उसमें धीरे-धीरे सोचने की प्रक्रिया शुरू हो गयी, तब जान गया कि ग़लती चित्र में नहीं, उसके स्वभाव व उसके रूप में ही है। इसी कारण से उसने एक और बार चित्र बनवाना चाहा। जब उसने नागवर्मा का चित्र मंगवाकर देखा तो उसने पाया कि उसमें नाम मात्र के लिए भी दर्प, दंभ नहीं है। सभासदों ने भी कभी अपने राजा को शांत स्वभाव का नहीं देखा था। इसीलिए उन्होंने भी चित्र की प्रशंसा नहीं की। राजा जब शांत स्वभाव का हो गया, तब उसमें निहित गांभीर्य व शांति को देखकर स्वयं मुग्ध हो गया। इसीलिए उसने नागवर्मा का सत्कार किया। अच्छाई और महानता को पहचानना हो तो देखनेवालों में उनके कुछ अंश हों तभी यह संभव है। जब राजा क्रोधी स्वभाव का था तब चित्र में अपने गंभीर और शान्त रूप को पहचान नहीं सका। अब रही, चित्रकारों की बात। दोनों महान हैं। वास्तविकता को चित्रित करने में विजय माहिर है तो नागवर्मा में त्रुटियों को सुधारते हुए, उनकी कल्पना करते हुए, चित्र बनाने की प्रतिभा है। इसी वजह से उसने आदर्श शासक के स्थान पर कल्पना करके राजा का चित्रांकन किया। दोनों चित्रकारों का सत्कार करके राजा ने अपनी बौद्धिक परिपक्वता और विवेक शक्ति का परिचय दिया। इसमें किसी प्रकार के अनौचित्य की कोई गुंजाइश नहीं।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः काशी भट्ट शशिकांत की रचना)

बिहार की एक लोक कथा

चूहों और चींटियों ने राजकुमार की मदद की

एक समय प्रतापगढ़ राज्य में राजा महेन्द्र प्रताप का शासन था। वह एक बुद्धिमान राजा था और उसकी प्रजा उसे पसन्द करती थी। उसके एक बेटा था जिसका नाम था- प्रतापवर्मा। छोटी उम्र में ही राजकुमार प्रजा का प्रिय पात्र बन गया था, क्योंकि वह बहुत कोमल और उदार हृदय का था। पशु उसे प्रिय थे। यद्यपि वह एक अच्छा धनुर्धारी था, फिर भी वह कभी शिकार खेलने नहीं जाता था।

एक दिन दरबार में तीन आगन्तुक आये। उनके पास अद्भुत शक्तियाँ थीं। जब वे अपनी करामाती शक्तियों के बारे में बखान कर रहे थे, तब प्रतापवर्मा उन्हें सुनकर मुग्ध हो गया। एक आगन्तुक धनुर्विद्या में निष्णात था। दूसरा वायु के वेग से दौड़ सकता था और तीसरा आगन्तुक, जिसे कोई न देख पाता, उसे देख सकता था।

राजकुमार ने उन आगन्तुकों के साथ काफी समय बिताया। शीघ्र ही उसके मन में उन तीनों के साथ यात्रा करने की इच्छा हुई। राजा पहले अपने बेटे को अपने राज्य के बाहर भेजने के पक्ष में नहीं था। लेकिन तीनों आगन्तुकों के इस आश्वासन पर कि वे राजकुमार की देखभाल करेंगे, राजा ने उनके साथ जाने की अनुमति दे दी। अगले दिन प्रतापवर्मा अपने तीनों मित्रों के साथ यात्रा पर चल पड़ा।

मार्ग में राजकुमार ने देखा कि एक चूहा पानी से भरे एक गड्ढे में से निकलने के लिए संघर्ष कर रहा है। जब भी गड्ढे की फिसलन
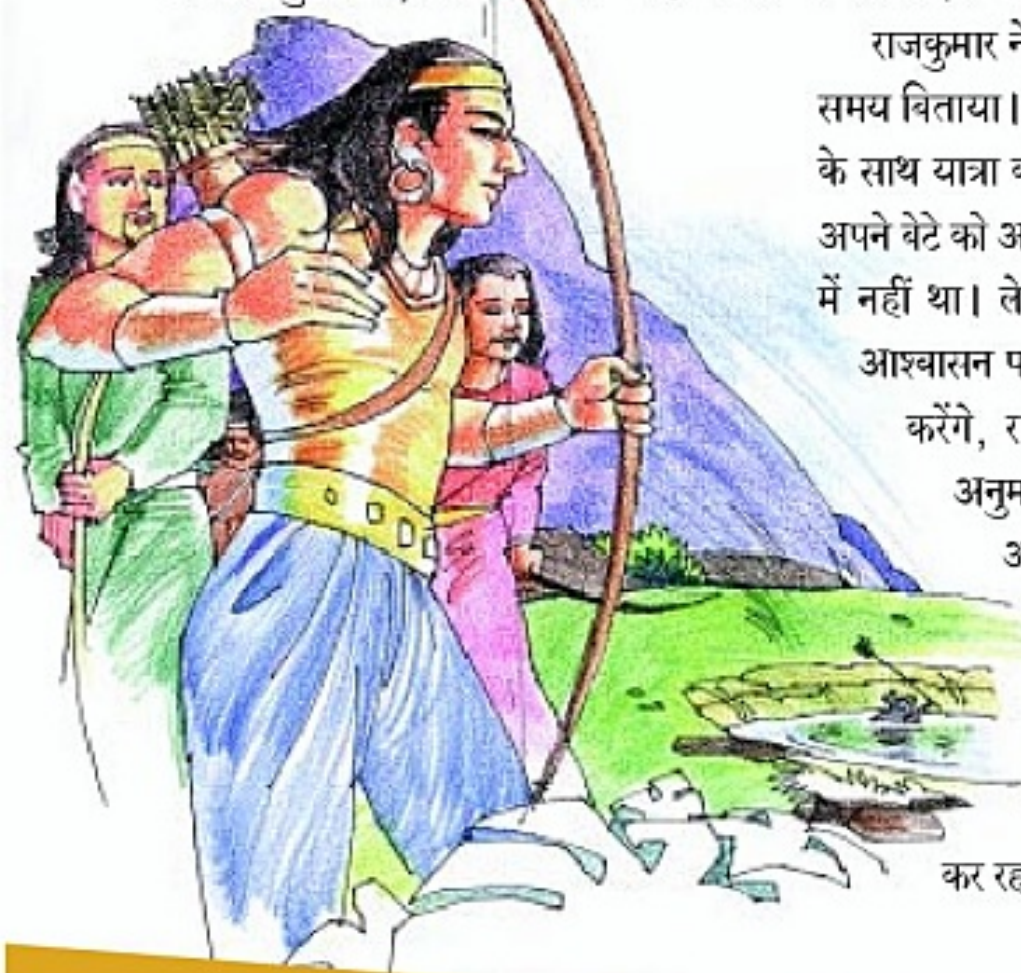
भरी दीवार पर वह चढ़ने का प्रयास करता, वह फिर गड्ढे में गिर पड़ता। राजकुमार को चूहे पर दया आ गई, इसीलिए उसने गड्ढे में एक तीर छोड़ दिया। चूहा तीर के सहारे गड्ढे से बाहर आ गया।

चूहे ने राजकुमार का कोमल मुखड़ा देख कर कहा, "ओ भले राजकुमार! मेरी ज़िन्दगी बचाने के लिए शुक्रिया। मैं चूहा राजा हूँ, चूहों का राजा। आज से मेरे राज्य के सभी चूहे ज़रूरत पड़ने पर आप की सेवा में हाज़िर हो जायेंगे। आपको केवल धरती पर लेटकर मेरा नाम पुकारना है। बस, फिर हम सब अपने बिलों से निकल कर आ जायेंगे।"

राजकुमार चूहा राजा पर मुस्कुराया और आगे बढ़ गया। जब चारों मित्र कुछ दूर आगे बढ़े ही थे कि प्रतापवर्मा ने कुछ चींटियों को एक पंक्ति में क्रमबद्ध होकर जाते देखा। अचानक, पास के एक घर से कोई बाहर आया और उन पर बिना ध्यान से देखे एक घड़ा पानी डाल गया। कुछ चींटियाँ उस कीचड़ में लथपथ हो डूब गईं और कुछ पानी से बाहर आने के लिए निराश होकर संघर्ष करने लगीं।

प्रतापवर्मा रुक गया और पास के एक पौधे से कुछ पत्तियाँ तोड़कर उन्हें पानी पर बिखेर दीं। जीवित बची हुई चींटियाँ पत्तियों पर चढ़ गईं जो हवा के झोंकों से दूर चली गईं। चींटियाँ इस प्रकार सूखी ज़मीन पर पहुँच गईं। वे रुककर बोलीं, "हे दयालु राजकुमार! हम हमेशा आप के शुक्रगुजार रहेंगे। जब भी आपको हमारी सेवा की ज़रूरत हो तो आपको केवल ताली बजानी है, हम तुरन्त आपके पास हाज़िर हो जायेंगे।"

अगले दिन राजुकमार प्रतापवर्मा तथा उसके साथी चन्द्रपुर नगर पहुँचे, जहाँ राजा चन्द्रसेन का राज्य था। रात में विश्राम के लिए स्थान की खोज करते समय उन्हें यह मालूम हुआ कि यहाँ का राजा बहुत दुष्ट और क्रूर है, जिसने उन अनेक राजकुमारों को बन्दी बना लिया है जो वहाँ की सुन्दर राजकुमारी चन्द्रमती से विवाह करने आये थे लेकिन राजा के कथनानुसार उसकी तीन शर्तें
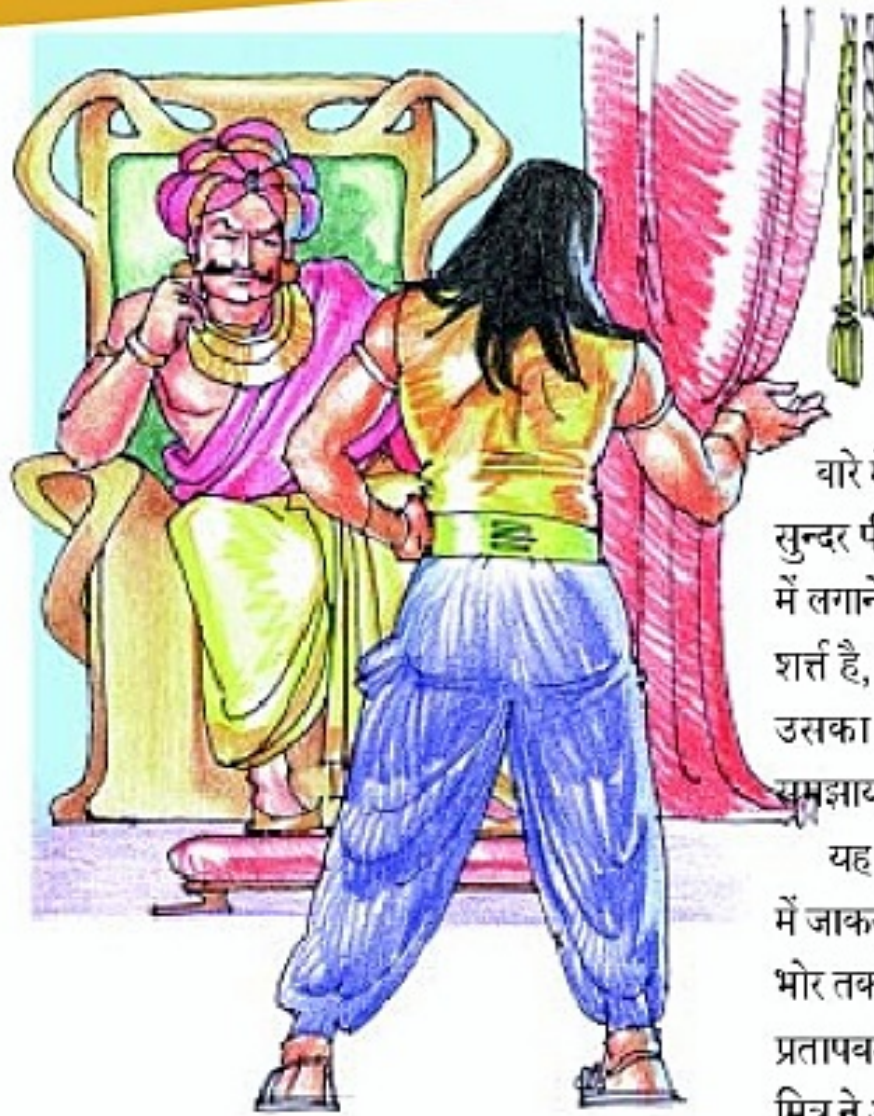
राजा ने राजकुमारी से विवाह की शर्त्तें बताई और मन ही मन इस बात पर हँसा कि शीघ्र ही प्रतापवर्मा भी बन्दी राजकुमारों की टोली में शामिल हो जायेगा।

प्रतापवर्मा ने राजा से उन शर्त्तों के बारे में पूछा। "हिमालय पर्वत की घाटियों में सुन्दर पीले फूल खिलते हैं। राजकुमारी के बालों में लगाने के लिए कल भोर तक उन्हें लाना पहली शर्त्त है, क्योंकि सूर्य की पहली किरण पड़ते ही उसका रंग फीका पड़ जायेगा।" राजा ने समझाया।

यह असम्भव कार्य था। सुदूर हिमालय पर्वतों में जाकर फूलों की खोज करना, उन्हें तोड़ना और भोर तक वापस आना भला कौन कर सकता है? प्रतापवर्मा ने अपने मित्रों से सलाह माँगी। एक मित्र ने अपनी दिव्य दृष्टि से देख लिया कि वे फूल ठीक किस स्थान पर खिलते हैं और वायु के वेग से दौड़नेवाले मित्र ने कहा, "घबराओ नहीं राजकुमार, मैं जाऊँगा और तुम्हारे लिए फूल ले आऊँगा!" अगले ही क्षण वह चल पड़ा और अन्य मित्रों के साथ राजकुमार उसके वापस आने की प्रतीक्षा करने लगा। आधी रात से पहले एक मित्र ने कहा, "हमारा दोस्त हिमालय में पहुँच गया है और फूलों को तोड़कर वापस चल पड़ा है।"

जैसी कि उम्मीद थी, वह मित्र फूलों के साथ भोर से पहले वापस पहुँच गया और प्रतापवर्मा उन फूलों को लेकर राजा से मिलने के लिए महल

पूरी नहीं कर पाये थे। उन राजकुमारों के पिता-राजाओं ने राजा चन्द्रसेन से उन्हें छोड़ देने के लिए अनुनय विनय की, किन्तु चन्द्रसेन ने उनकी एक न सुनी। प्रतापवर्मा ने निश्चय किया कि वह कम से कम उन राजकुमारों को मुक्त करने का प्रयास करेगा, राजकुमारी के साथ विवाह के लिए वह उतना चिन्तित नहीं था।

अगले दिन सुबह राजकुमार प्रतापवर्मा राजा चन्द्रसेन से मिला और अपना परिचय देते हुए उसने राजा की शर्त्तों से अनजान बनने का नाटक करते हुए राजकुमारी चन्द्रमती का हाथ माँगा।

की ओर चल पड़ा।

यद्यपि राजा चन्द्रसेन मुस्कुराया, फिर भी वह राजकुमार के इस साहसिक अभियान के पूरा कर लेने पर प्रसन्न नहीं था। लेकिन उसे यह पूछने का साहस नहीं हुआ कि उसने इस असम्भव कार्य को कैसे पूरा कर लिया। फिर उसने दूसरी शर्त बताई। उसने नौकरों से बीजों की तीन बोरियाँ मँगवाईं। फिर उन्हें महल के आंगन में बीजों को मिट्टी के साथ मिला देने के लिए कहा। ''अब कल सुबह तक बीजों को मिट्टी से अलग कर दो। पूरे तीनों बोरियाँ भरनी चाहिये।'' राजा ने राजकुमार को दूसरा कठिन कार्य करने के लिए कहा।

यह भी एक असम्भव कार्य था। राजकुमार प्रतापवर्मा ने क्षण भर तक सोचा। उसे उन चींटियों की याद आई जिन्हें उसने चन्द्रपुर आते हुए मार्ग में बचाया था। उसने तीन बार तालियाँ बजाईं। कुछ ही क्षणों में वहाँ हजारों चींटियाँ प्रकट हो गईं। राजकुमार उन्हें काम समझाकर सोने के लिए चला गया। सुबह जब महल में वापस आया तो उसे बीजों क ढेर देखकर बड़ी खुशी हुई।

शीघ्र ही राजा आ गया। उसने नौकरों को तीनों बोरियाँ भरने के लिए कहा। जैसे ही आखिरी बीज डाला गया, तीनों बोरियाँ भर गईं। राजा को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। राजा को इस बार भी यह पूछने का साहस नहीं हुआ कि उसने कैसे यह सब कर दिया। ''राजकुमार प्रतापवर्मा, तुम काफी चतुर जान पड़ते हो, लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि तुम तीसरा कठिन कार्य पूरा नहीं कर पाओगे। महल के फाटक पर एक विशाल वृक्ष है जो सड़ रहा है। कल सुबह तक इसे महीन चूर्ण बनाना है। लेकिन याद रहे, पेड़ को काटना मना है।'' राजा ने तीसरी शर्त समझाते हुए कहा।

राजकुमार ने फाटक पर जाकर सड़े हुए वृक्ष को देखा। वह ज़मीन पर लेट गया और बोला, ''चूहा राजा, कृपया आकर मेरी सहायता कीजिये।'' पलक झपकते ही, सैकड़ों चूहे वहाँ पर प्रकट हो गये और पेड़ को कुतरने लगे। अगली
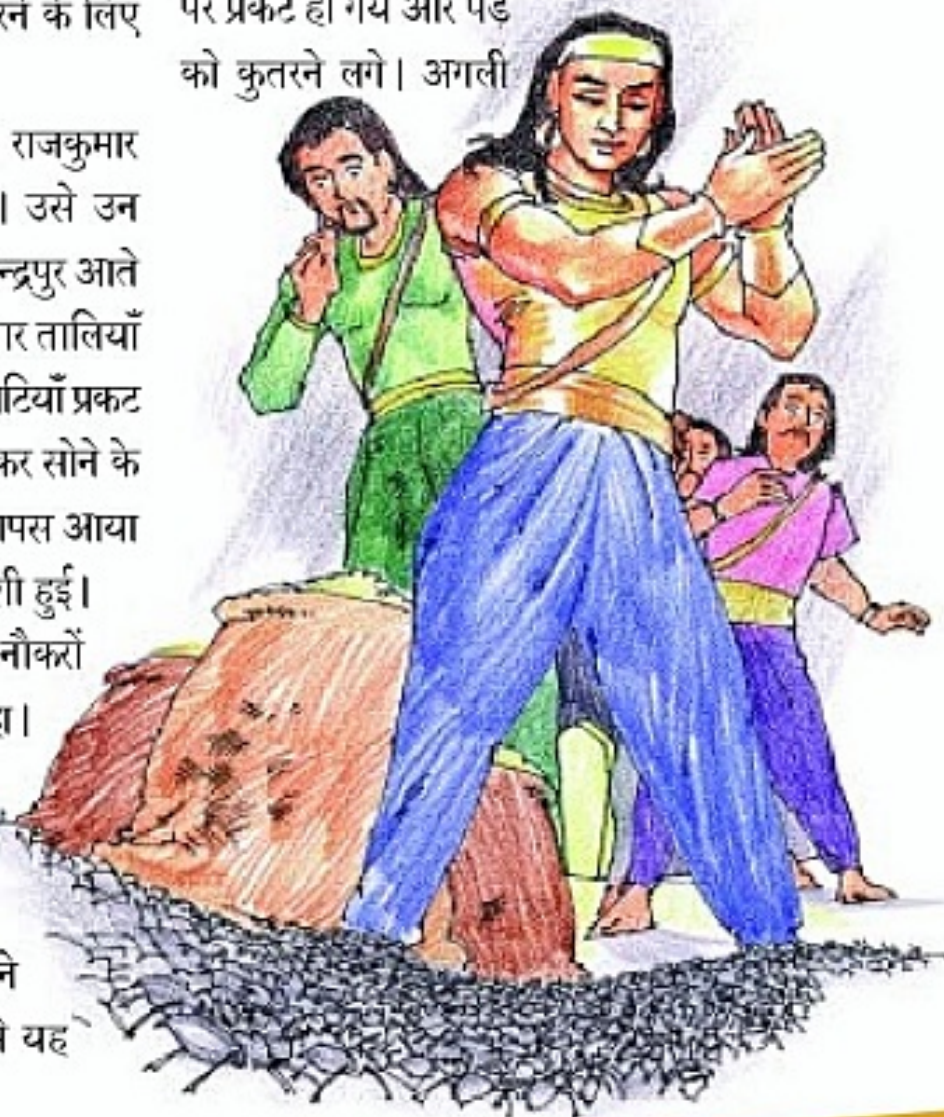
सुबह तक पेड़ का नामोनिशान तक न था। उसकी जगह पर था महीन चूर्ण का ढेर। राजकुमार को समय पर काम पूरा होते देख बड़ी खुशी हुई। उसने महल में जाकर राजा को सूचना दी। राजा ने फाटक पर आकर द्वारपालों से राजकुमार के काम की सच्चाई के बारे में पूछताछ की। द्वारपालों के विश्वास दिलाने पर वह सन्तुष्ट हो गया।

"राजकुमार प्रतापवर्मा, तुमने तीनों कठिन कार्य निष्पादित कर दिये हैं, इसीलिए, अब मैं अपना वचन पूरा करूँगा। कल मेरी बेटी से विवाह के लिए तैयार हो जाओ।" राजा ने कहा।

राजकुमार ने इस बात पर बल दिया कि बन्दी राजकुमारों को तुरन्त मुक्त कर दिया जाये। राजा चन्द्रसेन को राजकुमार से ऐसी माँग की उम्मीद नहीं थी। इसीलिए वह उससे नाराज़ हो गया।

फिर भी, चन्द्रमती और प्रतापवर्मा का विवाह बड़े धूमधाम से हुआ। राजकुमार अपने मित्रों के साथ तुरन्त प्रतापगढ़ के लिए रवाना हो गया। उन सबको घोड़े दिये गये। अपने दोस्तों के आगे-आगे राजकुमारी चन्द्रमती के साथ राजकुमार प्रतापवर्मा चल रहा था।

दुष्ट राजा चन्द्रसेन ने इस बीच अपने कुछ सैनिकों को आदेश दिया कि वे राजकुमार प्रतापवर्मा और उसके साथियों पर आक्रमण कर उन्हें बन्दी बना लें और राजकुमारी को वापस ले आयें, क्योंकि राजकुमार उससे अधिक चतुर साबित हुआ। बन्दी राजकुमारों को मुक्त कर देने की प्रतापवर्मा को अपनी मौन सहमति देने के कारण वह उससे चिढ़ गया था।

जैसे ही प्रतापवर्मा को राजा की दुष्टता भरी चाल का पता चला, उसने और उसके धनुर्धारी मित्र ने उन सैनिकों का बहादुरी से सामना किया और उन्हें तितर-बितर कर दिया। कुछ सैनिक मारे गये और कुछ नौ-दो ग्यारह हो गये। इसके बाद राजकुमार यात्रा पूरी कर प्रतापगढ़ पहुँचा, जहाँ अपने बेटे और अति सुन्दर बहू से मिलकर उनके माता-पिता की खुशी का ठिकाना न रहा।
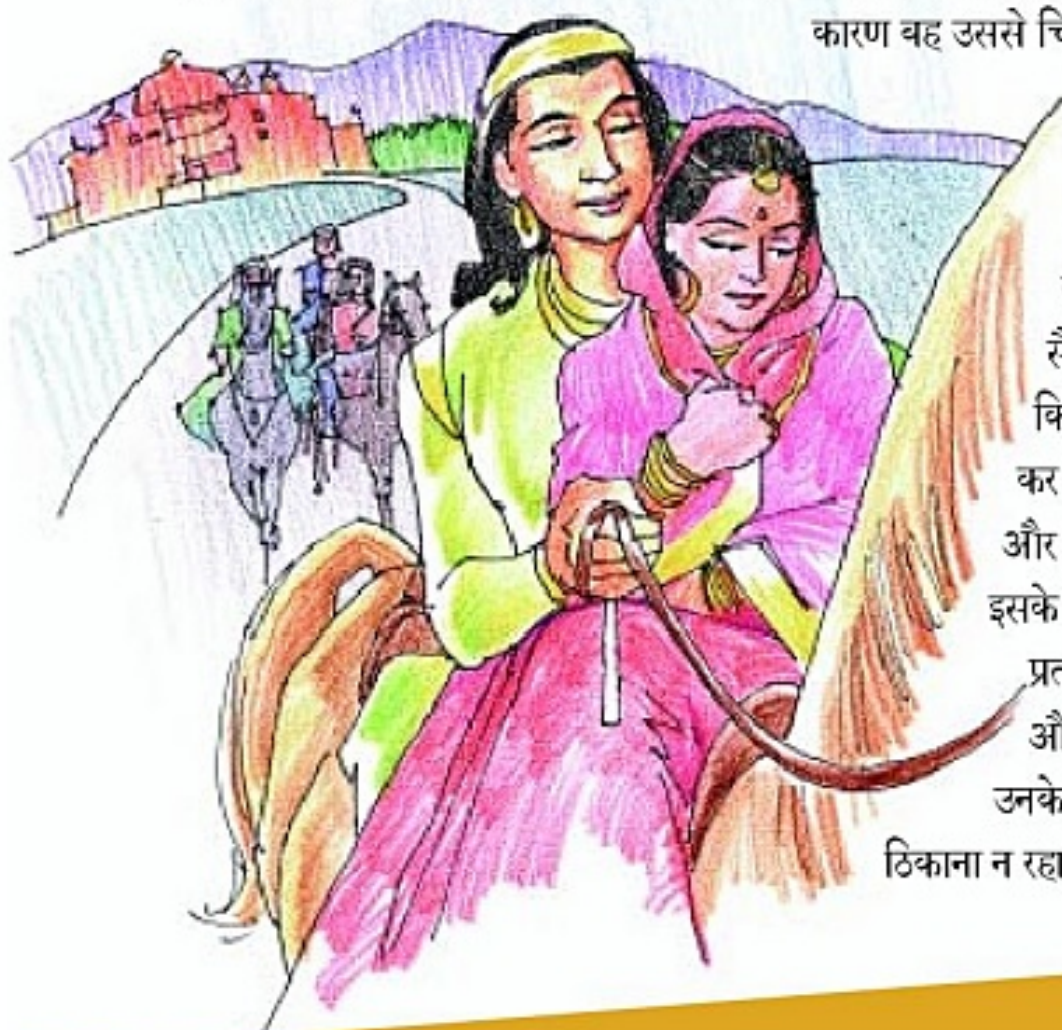
महान व्यक्तियों के जीवन की झाँकियाँ - १

विवेकानन्द तथा क्रूर हिंस्र पशु

स्वामी विवेकानन्द (१८६२-१९०२) को, जिनका पूर्व नाम नरेन्द्रनाथ था, श्री रामकृष्ण परमहंस के शिष्यों में सबसे अधिक ख्याति मिली। उन्होंने भारत को अपने अनोखे आध्यात्मिक धरोहर के प्रति जाग्रत करने के कार्य को एक मिशन के रूप में ग्रहण किया। उन्होंने, शिकागो में आयोजित पार्लमेण्ट ऑफ रिलीजन्स (१८९३) में प्रभावशाली भाषण के द्वारा पश्चिम जगत को भारतीय प्रज्ञा की महानता का विश्वास दिलाया।

अपने गुरु श्रीरामकृष्ण परमहंस के देहत्याग के बाद युवा विवेकानन्द ने लोगों में अपने गुरु के सन्देश के प्रचार के लिए भारत भर में भ्रमण करना आरम्भ किया। एक दिन बाराणसी के निकट वे एक सुनसान मार्ग पर जा रहे थे, तभी पीछे से कुछ आक्रामक बन्दरों का एक झुण्ड उनकी ओर दौड़ा। विवेकानन्द भागने लगे। लेकिन उन फुरतीले बन्दरों से क्या वे बच सकते थे? बन्दरों और उनके बीच की दूरी कम होती जा रही थी और वे बल्कि डरने लग गये थे। अचानक, उन्हें प्रबोधन का एक स्वर सुनाई पड़ा। मार्ग के किनारे बैठे एक साधु ने उन्हें चिल्लाते हुए कहा, "भागो नहीं। पशुओं का सामना करो!"

विवेकानन्द तुरन्त रुक गये। उन्होंने पीछे मुड़कर बन्दरों को अपने पास आने के लिए ललकारा। बन्दर घबरा कर रुक गये। विवेकानन्द जब उनकी ओर घूर कर देखने लगे तब वे एक-एक कर चलने बने।

बाद में, न्यू यॉक में इस घटना की चर्चा करते

हुए स्वामी विवेकानन्द ने दर्शकों को यूं कहा, ''वह एक बहुत बड़ी सीख थी; खतरे का सामना साहस के साथ करो। समस्याओं से भागना जब हम बन्द कर देते हैं, तब बन्दरों की तरह समस्याएँ भी हमें परेशान करना बन्द कर देती हैं। यदि हमें मुक्ति प्राप्त करनी है, तब हमें अपनी प्रकृति को जीतना होगा। हमें साहस के साथ भय, कष्ट और अज्ञान का सामना करना होगा, क्योंकि डरपोक कभी कुछ नहीं उपलब्ध कर सकते।''

विवेकानन्द केवल वीर ही नहीं थे, अपनी

प्रकृति के स्वामी भी थे। यदि स्पष्ट कहें तो उन्हें किसी चीज़ का भय न था। यद्यपि उन्हें पूरा विश्वास था कि भारत का भविष्य उज्ज्वल होगा, फिर भी, कभी-कभी देश की हालत, लोगों के स्वार्थ से उन्हें इतनी पीड़ा होती थी कि वे बहुत निराश हो जाते थे। एक दिन वे ऐसी ही मनोदशा में एक जंगल में पहुँचे। वे दिन भर जंगल में भूखे-प्यासे भटकते रहे। कुछ देर के लिए उनमें जीने का उत्साह जाता रहा। सूर्यास्त हो गया और वे थककर एक पेड़ के नीचे लेट गये। धीरे-धीरे अन्धेरा जंगल पर उतरने लगा। अचानक उन्होंने एक झाड़ी में छिपे हुए एक बाघ को देखा। शीघ्र ही वह बाहर निकल, आया और उनकी ओर बढ़ने लगा।

तुम्हारे विचार से विवेकानन्द ने क्या किया होगा? क्या वे डर गये? क्या वे भागकर जल्दी ही पेड़ पर चढ़ गये? नहीं। वे पूरी तरह शान्त और अविचलित बने रहे। 'मैं, फिर भी, कम से कम, इस पशु का एक अच्छा आहार तो बन सकता हूँ!' उन्होंने सोचा और जीवन के अन्तिम क्षणों की प्रतीक्षा करने लगे।

आश्चर्य! बाघ ने उन पर एक नज़र डाली और धीरे-धीरे वह खिसक गया। विवेकानन्द फिर भी नहीं उठे। शायद बाघ पुनः प्रकट होगा जब उसे अधिक भूख सतायेगी और संभवतः सपरिवार आये— उन्होंने सोचा। उन्होंने वहीं रात बिता दी। बाघ फिर नहीं लौटा।

रहस्यवादियों का कहना है कि जब तुममें भय का लेशमात्र भी नहीं रहता तब भय का कारण भी समाप्त हो जाता है।

THE ADVENTURES OF G-man

एंड्रेमैनिया

अल्टीमेटम भाग 1

अब तक की कहानी–दूसरे ग्रह से दो जी–मैन और एक जी–वूमन को टैरोटीन से लड़ने के लिए, उसकी ख़तरनाक मशीनों का विनाश करने के लिए राज़ी करने के बाद, हमारा जी–मैन धरती पर वापस आता है, उनके आने का इंतज़ार करता है।

दोस्तों आपका स्वागत है,
आप लोग आए, बड़ी ख़ुशी हुई।

ये भाषण-वाषण बंद करो, सीधे मुद्दे
पे आओ। हमें टैरोलीन का ठिकाना
बताओ ताकि कुछ काम हो सके।

मैंने सोचा कि इतनी दूर से आने के
बाद थक गए होगे... चलो छोड़ो,
पहले एक दूसरे से परिचय हो जाए।

अ... मेरा नाम है ऐंटी-जी,
अंधेरों का बादशाह,
विनाशक हूं मैं...

मुझे लगा यहां कोई इमर्जेंसी है..
अपने बारे में क्या कहूं?...

मेरा नाम है जी-मैन टू.

जी-मैन टू?

ये कैसा नाम है -
जी-मैन टू?

जी-मैन वन क्यों नहीं,
तुम उससे कम तो नहीं?

क्योंकि आप मूवी के पहले भाग को
कभी भी भाग 1 ऐसा नहीं कहते।
फ़िल्म ''धूम'' को धूम-भाग 1
ऐसा करके रिलिज़ नहीं किया गया था।
पर धूम - भाग 2 आ रही है...
ये ''धूम'' क्या बला है?
ये क्या बचकाना
हरक़त है?...
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

और इसका हमसे क्या लेना-देना है...
बचपना छोड़ो...
क्या हम बड़ों की तरह बात कर सकते हैं?
हम यहां कुछ करने आए हैं...
बहस करने नहीं!
सही कहा।
तो फिर चलो हल्ला
करते हैं टैरोलीन पर।
ज़रूर!!
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

सब कान खोलकर सुन लें-टैरोलीन के पास हज़ारों-लाखों ऐसे रोबोट्स हैं जिन्हें अपनी राह में आनेवाली हर चीज़ को तहस-नहस करने के लिए बनाया गया है। इस तरह तो मानवता का नाश ही हो जाएगा। हमें उसे बचाना है।

मेरे ख़्याल से हमें यहां ताक़त से नहीं दिमाग़ से काम लेना होगा। प्लानिंग करनी होगी? कोई आइडिया?

मैं बताती हूं।

बहुत अच्छे!!

एक बार फिर जी-मैन दरवाज़ा तोड़के अंदर आ जाता है।
देखिए तो कौन आया है?
फिर भागोगे यहां से, दुम दबाके... पहले की तरह।
पर आने से पहले बच्चे तुम्हे दरवाज़े की घंटी बजानी चाहिए थी। जैसा कि अच्छे बच्चे करते हैं। देखो, अब मुझे नया दरवाज़ा लगाना होगा।
दरवाज़ा छोड़ो, आगे-आगे देखो मैं तुम्हारा क्या-क्या तोड़ता हूं।
G-man के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते जी-मैन। मेरे रोबोट्स तुम्हारी चटनी बना देंगे। इससे अच्छा है कि घर जाकर टीवी पर कार्टून देखो।

तुम क्यों नहीं

देखते?

हा, हा...

दुबारा कोशिश कर लो बच्चे

अगर दम है तो।

अब खेल का आएगा मज़ा।
इससे पहले कि जी-मैन कुछ समझ पाता, वो रोबोट्स से घिर जाता है।
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

वो डटकर लड़ता है। पर वे भी कम नहीं। एक के बाद एक वे आते ही जाते हैं। तभी अचानक...
रोबोट्स पर चारों ओर से हमला शुरू हो जाता है।
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

टैरोलीन के शैतानी दिमाग़ में क्या चल रही है ख़तरनाक प्लानिंग? क्या वो जी-मैन और उसके दोस्तों का मुक़ाबला कर पाएगा? क्या वे मिलकर धरती को बचा पाएंगे? जी-मैन की क्या होगी अगली चाल? जानने के लिए पढ़िए एंड्रोमेनिया का अंतिम अंक।

सामरिक नृत्य का पर्व

कलिंग की चर्चा प्रत्येक भारतीय को याद दिलाती है उस महा युद्ध की जिसे सम्राट अशोक ने लड़ा और जीता था, लेकिन जिसने युद्ध की निस्सारता का सत्य इसके सामने रखा और बुद्ध के इस दर्शन के महत्व को महसूस कराया कि धर्म के माध्यम से लोगों का हृदय जीतना धरती पर बलपूर्वक अधिकार करने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।

सम्राट की दृढ़ धारणा में इस सुधार की स्मृति में प्रत्येक वर्ष धौली में, जहाँ विश्वास के अनुसार वास्तव में युद्ध हुआ था, **कलिंग महोत्सव** के नाम से एक सामरिक नृत्य-समारोह आयोजित किया जाता है। लगभग ३० वर्ष पहले, वहाँ नौवीं शताब्दी के बौद्ध मठ के निकट, विश्व शान्ति स्तूप बनाया गया। स्तूप और बुद्ध की ऊँची प्रतिमा समारोह के लिए एक आदर्श पृष्ठपट प्रस्तुत करते हैं।

दो दिनों के इस राष्ट्रीय समारोह में देश के भिन्न-भिन्न भागों से युद्ध-कला-नर्तक आते हैं, जैसे - केरल के दक्षिण भाग से *कलारीपयत्तु*, मणिपुर से *टांग टा* और उड़ीसा से ही *छाव* तथा *पैका*, जो सबके सब ''नृत्य के कलात्मक माध्यम से युद्ध की पारम्परिक कठोरता के साथ उदात्त के सामंजस्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।''

इस वर्ष, महोत्सव ४ और ५ फरवरी को आयोजित होगा। महीने के अन्तिम तीन दिनों तक राजधानी भुवनेश्वर, वार्षिक **राजारानी पर्व** के अवसर पर कंठ संगीत और वाद्य संगीत की स्वर लहरियों से गूंजता रहेगा। इस उत्सव का नाम राजारानी पर्व इसीलिए दिया गया कि यह ग्यारहवीं शताब्दी के राजारानी मन्दिर के विस्तृत हरे मैदान में आयोजित किया जाता है। भारत भर के संगीतज्ञ इस पर्व में भाग लेने के लिए मिले निमन्त्रण को एक सम्मान समझते हैं।

दोनों उत्सव पर्यटन विभाग, उड़ीसा द्वारा आयोजित किये जाते हैं।

फरवरी महीने में ही, राजस्थान में मरुभूमि उत्सव, आन्ध्र प्रदेश में दक्कन उत्सव तथा मध्य प्रदेश में खजुराहो उत्सव मनाये जायेंगे।

पाठकों के लिए एक कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः

एक राजा की, जो अपने दरबारी विदूषक के मज़ाक पर अपनी हँसी कभी रोक नहीं पाता था, बड़ी इच्छा थी कि वह कभी विदूषक का ही मज़ाक उड़ाये। यह बेशक इतना आसान न था। विदूषक कभी राजा को ऐसा मौका नहीं देता था।

एक दिन राजा अपने दरबारियों के साथ घूमने निकला। उन सबने विदूषक को अपने घोड़े पर सवार सामने से आते हुए देखा। उसने जैसे ही राजा को देखा, घोड़े से उतरकर उसे झुककर सलाम किया।

राजा ने सोचा कि यही वह मौका है जिसका उसे बहुत दिनों से इन्तज़ार था। ''हलो, मेरे अच्छे विदूषक, क्या यह मज़ाकिया नहीं लगता कि तुम्हारा घोड़ा इतना मजबूत और हट्टाकट्टा है और तुम इतने दुबले-पतले?'' राजा ने उसे आड़े हाथों लिया।

अब कल्पना करो कि विदूषक ने क्या उत्तर दिया होगा। क्या उसके उत्तर ने और दरबारियों को हँसाया? अथवा राजा को क्या शर्मिन्दा होना पड़ा?

कहानी को १०० से १५० शब्दों में पूरा करो। एक यथोचित शीर्षक दो और अपनी प्रविष्टि को निम्नलिखित कूपन के साथ लिफाफे में भेज दो जिसपर लिखा हो-''पढ़ो और प्रतिक्रिया दो।''

(नोटः यह शृंखला की अन्तिम प्रतियोगिता है। -सम्पादक)

अन्तिम तिथिः ३१ जनवरी २००६

नाम ------------------------------------ **उम्र** ------------ **जन्मतिथि** ------------------------

विद्यालय -- **कक्षा** ------------

घर का पता --

-- **पिनकोड** --------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर **प्रतियोगी के हस्ताक्षर**

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता (मई '०५)

सर्वश्रेष्ठ विजेता प्रविष्टि

त्याग का अभ्यास :

ज़मीन्दार "आरती में और पैसे क्यों दूँ?"

पुजारी (विचार पूर्वक)- "दो कारणों से।"

ज़मीन्दार (चौंककर)- "कौनसे कारण?"

पुजारी- "सब जानते हैं कि आप धनवान और धर्मनिष्ट हैं। शायद आप भगवान को दान देना, सूरज को दीपक दिखाना समझने का यह भ्रम टूट जायेगा। क्योंकि आज आप आरती में सबसे आगे खड़े हैं। और दस पैसा दान भी कर चुके हैं। आपके पीछे खड़ा व्यक्ति यह जानने को उतावला हो रहा है कि इतने बड़े ज़मीन्दार ने आज जीवन में पहली बार क्या दान दिया है। आप महाकंजूस और ढोंगी हैं यह बात जंगल के आग की तरह पूरे इलाके में फैलने वाली है। जिसकी कीर्ति मर गई वह जीते हुए भी मरा समान है। यही पहला कारण है।"

रूआँसे और दबे स्वर में ज़मीन्दार ने पूछा, "दूसरा कारण क्या है।"

पुजारी- "आपको मरते समय कितनी मात्रा में पीड़ा होगी वह मुझे भगवान दिखा रहा है।

ज़मीन्दार (डरकर)- "वह कैसे?"

पुजारी- "जिसे अब तक दस पैसा त्यागने का भी अभ्यास नहीं हुआ है उसे मरते समय सब कुछ त्यागने में कितनी दुविधा, कठिनाई, अंतर्द्वन्द्ध और पीड़ा होगी। कमाई, मकान, दुकान, सम्बन्धी, शरीर और सभी कुछ त्यागने का अभ्यास फिर कब करोगे। सचमुच भगवान आपके पैसों का भूखा नहीं है। आरती में भगवान रुपया नहीं, त्यागने का अभ्या देखता है। त्याग से वैराग्य वैराग्य से भक्ति मिलेगी। और भक्ति से भगवान।"

ज़मीन्दार का हृदय-परिवर्तन हो गया। जितने आभूषण शरीर पर थे सब दान कर दिये और वह भी मुस्कुराते हुए नम्रतापूर्वक दोनों हाथ जोड़कर। ज्ञान की चमक ज़मीन्दार के चेहरे से दमक रही थी।

कृष्ण कुमार पाल, रवीन्द्र बाल भारती

जवाहर प्रसाद पाल, पाल कान नाक गला हास्पिटल

नासौल, हरियाणा-१२०००१.

समाचार-झलक

ताले नहीं तो चोरी भी नहीं

गुजरात में, आनन्द जिले के पेटली नामक गाँव में, घरों में ताले नहीं लगाये जाते। सिर्फ़ रात में दरवाजे बन्द किये जाते हैं। फिर भी, पिछले २५ वर्षों में इस गाँव से किसी प्रकार के अपराध की कोई घटना दर्ज नहीं कराई गई। न पुलिस में शिकायत की गई और न किसी झगड़े के निबटारे के लिए कोई कचहरी में गया। एक बार चार पेड़ों को लेकर दो ग्रामीणों में झगड़ा हो गया। पंचायत को इस विवाद को सुलझाने में सिर्फ दो घण्टे लगे: दो पेड़ एक ग्रामीण को दे दिये गये और दूसरे को एक पेड़ दिया गया, जबकि चौथे पेड़ से दोनों दावेदारों को समान रूप से लाभ उठाने का फैसला सुनाया गया। इस गाँव में छुआछूत का भेदभाव कोई नहीं मानता। हरेक को बीस कूओं में से किसी में से पानी लेने की छूट है; गाँव के तीनों मन्दिरों के दरवाजे हरेक के लिए खुले हैं। इन सब कारणों से राज्य सरकार ने पेटली को 'तीर्थगाम' तीर्थयात्रा के योग्य घोषित किया है।

कालिदास का मन्दिर

पाँचवी शताब्दी में उज्जैनी के सम्राट विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक, संस्कृत के सबसे बड़े कवि और नाटककार कालिदास का, उड़ीसा में केन्द्रपारा जिला के बाबाकर पुर गाँव में एक मन्दिर है। गाँव के ज़मीन्दार बलराम भागरबर राय ने, जो संस्कृत के विद्वान थे, सन्‌, १८०२ में कालिदास का एक मन्दिर बनवाया। गाँव के तथा इसके आसपास के लोग तब से कवि की प्रस्तर प्रतिमा की पूजा करते आ रहे हैं। उस मन्दिर में सभी दैनिक अनुष्ठान सम्पन्न किये जाते हैं। यह श्री श्री कवि कालिदास मन्दिर के नाम से विख्यात है।

घमण्ड का नतीजा

काशी के राजा ब्रह्मदत्त के शासन काल में बोधिसत्व ने गुत्तिल नामक वैणिक के रूप में जन्म लिया। सोलह साल की उम्र में गुत्तिल ने ऐसी ख्याति प्राप्त की कि सारे जंबू द्वीप में बीणा-वादन में उनकी तुलना कर सकनेवाला कोई नहीं था। इसीलिए काशी के राजा ने उनको अपना दरबारी वैणिक नियुक्त किया।

इसके कई साल बाद काशी से कुछ व्यापारी व्यापार करने के लिए उज्जयिनी नगर में पहुँचे। गुत्तिल के वीणा-वादन ने काशी राज्य के सभी लोगों में वीणा के प्रति रुचि पैदा कर दी थी। इसीलिए काशी के व्यापारियों का मन वीणा-वादन की ओर झुक गया था। उन लोगों ने उज्जयिनी के व्यापारियों से कहा, ''हमलोग वीणा का वादन सुनना चाहते हैं। नगर के श्रेष्ठ कलाकारों को बुला कर वीणा-वादन का आयोजन कीजिए। जो भी खर्च होगा, हम लोग देंगे।''

उज्जयिनी के कलाकारों में मूसिल सबसे मशहूर वैणिक थे। इसीलिए काशी के व्यापारियों का मनोरंजन करने के लिए उनकी वाद्यगोष्ठी का इंतजाम किया गया। मूसिल अपनी वीणा लेकर व्यापारियों के डेरे पर आ पहुँचे। वीणा की तंत्रियों में श्रुति बिठा कर झंकृत करने लगे। देर तक मूसिल वीणा बजाते रहे, लेकिन काशी के व्यापारियों के चेहरों पर पल भर के लिए भी आनन्द के भाव दिखाई नहीं पड़े। इस पर मूसिल ने मध्यम श्रुति करके कुछ गीतों का आलाप किया। इस पर भी व्यापारियों में उत्साह पैदा नहीं हुआ। उनके हृदय में संगीत के आनन्द की अनुभूति नहीं हुई। उनका मन पुलकित नहीं हुआ।

आख़िर मूसिल ने हताश होकर पूछा, ''महाशयो, मैं बड़ी देर से वीणा बजा रहा हूँ, फिर भी आप लोगों के चेहरों पर खुशी की रेखाएँ नहीं हैं। क्या मेरा वीणा-वादन पसन्द नहीं आया?''

काशी के व्यापारी अचरज से एक-दूसरे को ताकने लगे। उनमें से एक ने कहा, ''ओह, आप अभी तक बीणा बजाते रहे? हम सोच रहे थे कि आप वीणा की तंत्रियों को ठीक कर रहे हैं।''

दूसरे ने कहा, ''हम सोच रहे थे कि शायद बीणा बिगड़ गई है, तंत्रियाँ ठीक से झंकृत न होकर आप को परेशान कर रही हैं? माफ़ कीजियेगा।''

ये बातें सुनने पर मूसिल का चेहरा उतर गया, खिन्न होकर बोले, ''आप लोगों ने मुझ से भी बड़े कलाकार का बीणा-वादन सुना होगा। इसीलिए मेरा बादन आप लोगों को पसंद नहीं आया। कृपया उस कलाकार का नाम बताइये।''

''क्या आप ने हमारे काशी राज्य के दरबारी वैणिक गुत्तिल के बीणा-वादन के बारे में नहीं सुना?'' व्यापारियों ने पूछा।

''क्या वे बहुत बड़े बिद्वान हैं?'' मूसिल ने पूछा।

''उनकी कला के सामने आप किस खेत की मूली हैं?'' व्यापारियों ने कहा।

''तो मैं तब तक आराम नहीं लूँगा जब तक मैं उनके बराबर का कलाकार न कहलाऊँ? आप लोगों को मेरे बादन के लिए मूल्य चुकाने की ज़रूरत नहीं है।'' यह उत्तर देकर मूसिल वहाँ से चले गये। उसी दिन मूसिल घर से रवाना होकर काशी नगर गये और बोधिसत्व से मिले।

बोधिसत्व ने मूसिल से पूछा, ''बेटा, तुम कौन हो? किसलिए आये हो?''

''महानुभाव, मैं उज्जयिनी नगर का निवासी हूँ। मेरा नाम मूसिल है। आप से वीणा-वादन सीखने आया हूँ। आपका अनुग्रह हुआ, तो आप के बराबर का कलाकार बनना चाहता हूँ।'' मूसिल ने जवाब दिया।

बोधिसत्व ने मूसिल को बीणा-वादन सिखाने को मान लिया।

मूसिल प्रतिदिन घर पर वीणा-वादन का अभ्यास करते और बोधिसत्व के साथ राज दरबार में हो आया करते थे।

कई साल बीत गये। एक दिन बोधिसत्व ने मूसिल से कहा, ''बेटा, तुम्हारी बिद्या पूरी हो गई है। तुम्हें मैंने अपनी सारी विद्या सिखा दी है। अब तुम अपने देश को लौट सकते हो।''

मगर मूसिल के मन में उज्जयिनी लौटने का विचार न था, क्योंकि वे समझते थे कि वहाँ पर

उनकी विद्या का कोई आदर नहीं होगा। उनमें संगीत को समझने की न तो बुद्धि है और न उसके भाव को ग्रहण करने योग्य हृदय की संवेदनशीलता। इसीलिए वीणा – वादन में जब वे कच्चे थे तभी उज्जयिनी के निवासियों ने उनको महान कलाकार मान लिया था। किसी भी उपाय से सही, काशी राज्य के दरबारी कलाकार बनने पर ही उनकी ज़्यादा प्रतिष्ठा होगी। इस वक़्त उन्हें बोधिसत्व के बराबर की विद्वत्ता प्राप्त है। अलावा इसके बोधिसत्व बृद्ध हो चुके हैं! इसीलिए काशी राज्य के दरबार में स्थान पाने की कोशिश करनी चाहिए। यों विचार कर मूसिल ने बोधिसत्व से कहा, ''मैं उज्जयिनी लौटना नहीं चाहता। आप मानते हैं कि मुझे भी आप के बराबर पांडित्य प्राप्त है। इसीलिए यदि आप मेरे लिए भी राजदरबार में स्थान दिला दें तो आप की बड़ी कृपा होगी।''

दूसरे दिन बोधिसत्व ने राजा से यह बात कही। राजा ने सोच-समझकर बताया, ''मूसिल आप के यहाँ बहुत समय से शिष्य बनकर रहा, इसीलिए उसे दरबारी विद्वान बना लेंगे; लेकिन आप के वेतन का आधा ही वेतन उसे दिया जाएगा। यदि वह मेरे इस निर्णय से सहमत है तो इस पद को वह स्वीकार कर सकता है।''

बोधिसत्व ने यह बात मूसिल को बताई।

बोधिसत्व के मुँह से ये बातें सुनने पर मूसिल मन ही मन ईर्ष्या से भर उठा।

वह सोचने लगा, ''मैं बोधिसत्व से किस बात में कम हूँ? उनके वेतन के बराबर मुझे भी क्यों नहीं देते?''

मूसिल राजा के पास पहुँचा और बोला, ''महाराज, सुना है कि आप मुझे आधे वेतन पर दरबारी विद्वान नियुक्त कर रहे हैं। मैं अपने गुरुजी

के बराबर का पांडित्य रखता हूँ। उनके बराबर वेतन मुझे भी मिलना चाहिए।''

राजा क्रोध में आ गये और बोले, ''मैं तुम को गुत्तिल के शिष्य के रूप में जानता हूँ; लेकिन उनके बराबर के वैणिक के रूप में नहीं; तुम्हें गुत्तिल ने शिष्य के रूप में स्वीकार किया और तुम्हारी नौकरी के लिए पैरवी की, इसीलिए तुम्हें दरबारी वैणिक बनने का मौका दिया जा रहा है। गुत्तिल सिर्फ हमारे राज्य के ही नहीं, बल्कि देश भर में सर्वश्रेष्ठ बीणा बादक हैं। तुम अभी उनका मुकाबला नहीं कर सकते। तुम जो उनकी बराबरी का दावा कर रहे हो, उसे प्रत्यक्ष देखने पर ही मान सकता हूँ।''

''आप चाहें तो मेरी परीक्षा ले लीजिए।'' मूसिल ने कहा।

''अच्छी बात है। मौक़ा देख मैं तुम दोनों के बीच प्रतियोगिता का प्रबंध करूँगा। यदि तुम्हारा वादन तुम्हारे गुरुजी के वादन के बराबर साबित हुआ तो मैं तुम्हें भी उनके बराबर का वेतन दूँगा। वरना तुम्हें दरबार में प्रवेश करने न दूँगा। तुम्हें मेरी ये शर्तें मंजूर हैं?'' राजा ने पूछा। मूसिल ने उन शर्तों को मान लिया।

इसके बाद गुरु और शिष्य के बीच प्रतियोगिता का प्रबंध हुआ। वे दोनों अपनी-अपनी कला प्रदर्शित करने लगे। इस बीच बोधिसत्व की वीणा का एक तार टूट गया, मगर वे शेष तारों पर बीणा बजाते रहे। इसे देख मूसिल ने भी अपनी बीणा का एक तार जान-बूझकर तोड़ डाला।

थोड़ी देर बाद बोधिसत्व की बीणा की एक और तंत्रि टूट गई। मूसिल ने भी एक और तार तोड़ डाला। चंद मिनटों में बोधिसत्व की वीणा की सारी तंत्रियाँ टूट गईं। मूसिल ने अपनी बीणा के सारे तार तोड़ डाले। मगर बोधिसत्व टूटी तंत्रियों पर ही स्वरों का आलाप करने लगे। पर मूसिल ऐसा कर न पाया। दरबारियों ने बोधिसत्व की प्रतिभा देख तालियाँ बजाईं और मूसिल का मज़ाक़ उड़ाया।

मूसिल यह अपमान सह नहीं पाया। वह उसी वक़्त दरबार से बाहर चला गया और उसी दिन उज्जयिनी के लिए रवाना हो गया।

रामायण

महामुनि बाल्मीकि का आश्रम तमसा नदी के तट पर था। एक दिन नारद मुनि वहाँ पधारे। बाल्मीकि ने शास्त्रोक्त विधि से उनकी पूजा की और कहा, ''महात्मा, इस युग में क्या कोई ऐसा पुरुष है, जो सकल सद्गुण संपन्न और महा पराक्रमी हो?''

तब नारद ने, बाल्मीकि को श्रीराम की कथा सविस्तार सुनायी। नारद महामुनि के वहाँ से निकलते-निकलते स्नान का समय हो गया। उनके चले जाने के बाद बाल्मीकि अपने शिष्य भरद्वाज को लेकर तमसा नदी के तट पर गये।

वहाँ उन्होंने क्रौंच पक्षियों की एक जोडी देखी। बल्कल वस्त्र पहनकर पानी में उतरते हुए वे क्रौंच पक्षियों का आनंद व उत्साह देखते रह गये। इतने में एक भील ने पुरुष पक्षी पर अपना बाण चलाया। वह नीचे गिरकर छटपटाने लगा। मादा पक्षी आर्तनाद करने लगी। यह दृश्य देखकर बाल्मीकि के हृदय में उस पक्षी पर दया उमड़ आयी। उस किरात पर उन्हें बड़ा क्रोध आया। उनके मुँह से अनायास ही एक श्लोक निकल पड़ा, जिसमें उन्होंने कहा, ''अरे ओ कठोर मानव, तुमने प्रेम में मग्न दो पक्षियों में से एक को मार डाला। जीवन भर तुम सुखी और शांत नहीं रहोगे।''

अपने मुँह से निकले श्लोक पर बाल्मीकि स्वयं बिस्मित हुए। आश्रम लौटने के बाद भी उसी श्लोक के बारे में सोचते रहे।

इतने में ब्रह्मा उन्हें देखने आये। उन्हें देखते ही बाल्मीकि तुरंत उठ खडे हो गये और साष्टांग प्रणाम किया। फिर वे मौन खड़े रहे। तब ब्रह्मा ने कहा, ''बाल्मीकि, मेरे अनुग्रह के कारण तुम

कविता करने लगे हो। तुमने तो इसके पूर्व राम की कथा सुन ली है। उस कथा को महाकाव्य के रूप में रचो। जब तक यह पृथ्वी है, तब तक वह भी शाश्वत रहेगा। जब तक वह होगा, तुम्हारा संचार उत्तम लोकों में होता रहेगा।'' यों कहकर ब्रह्मा अदृश्य हो गये।

यों ब्रह्मा के प्रोत्साहन से प्रेरित होकर वाल्मीकि ने रामायण की रचना की, जिसे पढ़कर किसने आनंद नहीं लिया होगा।

वैवस्वत सूर्य का पुत्र था। इक्ष्वाकु वैवस्वत का पुत्र था। वैवस्वत ने सातवाँ मनु होकर शाश्वत कीर्ति कमायी। उनके तदुपरांत इक्ष्वाकु के संतान सूर्यवंशज कहलाये जाने लगे।

इनमें से सगर भी एक था। वह छे चक्रवर्तियों में से एक था। स्वर्ग से गंगा को ले आनेवाले भगीरथ इसी सगर का पोता था। सूर्यवंश के राजाओं ने अयोध्या नगर को अपनी राजधानी बनाकर कोसल देश पर शासन किया। वैवस्वत मनु ने स्वयं अयोध्या का निर्माण किया।

शत्रुओं के लिए दुर्भेद्य अयोध्या पर सूर्यवंशी राजा दशरथ शासन करते थे। वे ऐश्वर्य में कुबेर से कम नहीं थे। वे महा पराक्रमी थे।

दृष्टि, जयंत, जिय, सिद्धार्थ, अर्थसाधक, अशोक, मंत्रपाल, सुमंत ये आठों दशरथ के मंत्री थे। वसिष्ठ महामुनि इनके कुलगुरु थे। वसिष्ठ व वामदेव उनके पुरोहित थे। गुप्तचरों के द्वारा उन्हें जानकारी मिलती रहती थी कि देश के किस कोने में क्या हो रहा है। अपने मंत्रियों की सहायता से दशरथ न्यायपूर्वक शासन चलाते थे। उनकी प्रजा हर तरह से सुखी थी। किसी पर कोई अन्याय नहीं करता था। सभी वर्णों के लोग अपने-अपने धर्म का पालन करते थे। इनके राज्य में कोई दीन-दुखी नहीं था।

दशरथ को किसी बात की कमी नहीं थी, किन्तु वे संतानहीन थे। इसी को लेकर वे बहुत चिंतित रहते थे। एक दिन उन्होंने सोचा कि अश्वमेध याग करके देवताओं को संतुष्ट करूँ और संतान पाऊँ। अपने मंत्रियों में से अग्रगण्य सुमंत के द्वारा उन्होंने वसिष्ठ, वासुदेव, सुयज्ञ, जाबालि आदि गुरुओं को तथा अन्य ब्राह्मण श्रेष्ठों को बुलवाया और उनकी सलाह माँगी। उन्हें अश्वमेध यज्ञ का विचार अच्छा लगा।

उन सबके चले जाने के बाद मंत्री सुमंत ने

दशरथ से कहा, "महाराज, आपने जिस अश्वमेध यज्ञ की बात सोची है, वह नितांत उचित है। परंतु इस याग को संपादित करने की शक्ति व महिमा केवल ऋश्यशृंग में ही है। उनसे बढ़कर कोई और नहीं है। उनका वृत्तांत मुझसे सुनिये," फिर सुमंत ने यों उनकी कथा सुनायीः

अंगदेश का शासक रोमपाद दशरथ के मित्रों में से एक था। एक बार अंगदेश में भयंकर अकाल पड़ा। रोमपाद इस अकाल को लेकर चिंताग्रस्त हो गया। ब्राह्मणों को बुलवाकर अकाल के अंत का उपाय पूछा।

ब्राह्मणों ने कहा, "महाराज, ऋश्यशृंग, विभंडक मुनि का पुत्र है। जहाँ वह रहता है, वहाँ अकाल नहीं पड़ता। उसे अंगदेश बुलवाइये, अपनी पुत्री शांता से उसका विवाह रचाइये, उसे अंगदेश में ही स्थायी रूप से रहने का प्रबंध कीजिये तो अकाल मिट जायेगा और देश सुभिक्ष होगा।"

तब रोमपाद ने अपने पुरोहित और मंत्रियों को बुलवाया और उनसे कहा, "आप लोग जाइये और ऋश्यशृंग को यहाँ ले आइये।"

यह सुनते ही पुरोहित व मंत्री डर गये, क्योंकि ऋश्यशृंग अरण्य व तपस्या को छोड़कर कहीं निकलता नहीं था। किसी के बुलाने से जानेवालों में से नहीं था। क्रोधित होकर शाप देने की संभावना भी थी। उसे ले आना हो तो कोई मायामय उपाय ढूँढ़ना होगा। पुरोहित ने वह उपाय रोमपाद को यों सुनायाः

"महाराज, ऋश्यशृंग बचपन से ही लेकर अरण्य में ही रहा और वेदों का अध्ययन किया। तपस्या में ही अधिकतर मग्न रहता है। लेकिन उसे प्राकृतिक सौन्दर्य देखते हुए वन में घूमना अच्छा लगता है। वैसे वह बाहर कभी नहीं जाता लेकिन वन के फूलों, पशु - पक्षियों को देखते हुए वह कोसों दूर निकल जाता है। उसमें सांसारिक ज्ञान लेश मात्र भी नहीं है। उसे यह भी नहीं मालूम कि स्त्रियाँ कैसी होती हैं। हम चंद नर्तकियों को उसके पास भेजें तो शायद वह उनके प्रति आकर्षित होकर उनके साथ यहाँ चला आये।"

रोमपाद ने इसके लिए अपनी सहमति दे दी। कुछ नर्तकियों को अच्छी तरह से अलंकृत करके उन्हें ऋश्यशृंग के आश्रम में भेजा। ऋश्यशृंग सदा

पिता की सेवा सुश्रूषा में लगा रहता था और आश्रम को छोड़कर कहीं जाता नहीं था। परंतु एक दिन किसी कारणवश वह आश्रम के बाहर आया। नर्तकियाँ गीत गाती हुई, नृत्य करती हुई उसके पास पहुँचीं। उनके नयनाभिराम स्वरूपों, अलंकारों, मधुर कंठों को सुनकर ऋश्यशृंग आश्चर्य में डूब गया और उनके प्रति आकर्षित हो गया।

नर्तकियों ने उससे पूछा, ''आप कौन हैं? इस अरण्य में क्यों अकेले घूम रहे हैं?''

''मैं बिभंडक महामुनि का पुत्र हूँ। आप आश्रम आयेंगी तो मैं आपकी उचित रूप से पूजा करूँगा,'' ऋश्यशृंग ने कहा। वे उसके साथ-आश्रम गयीं और उसके दिये कंद, फल खाये। उन नर्तकियों ने भी अपनी तरफ़ से कुछ पकवान उसे दिये और कहा, ''ये भी फल हैं, इन्हें चखकर देखिये। हमें तपस्या करने के लिए अभी लौटना है,'' यह कहती हुई वे वहाँ से चली गयीं।

ऋश्यशृंग ने उनके दिये पकवान खाये और समझा कि वे भी फल ही हैं। परंतु वे पकवान फलों से अधिक स्वादिष्ट थे। दूसरे दिन, उन्हें देखने और मिलने की आशा लेकर वह उसी स्थल पर गया, जहाँ वे कल उससे मिली थीं।

उसे देखते ही उन नर्तकियों ने कहा, ''महाशय, आप भी हमारे आश्रम में पधारियेगा। वहाँ आपकी अच्छी आवभगत होगी।''

ऋश्यशृंग ने सानंद अपनी स्वीकृति दे दी और उनके साथ चल पड़ा। ऋश्यशृंग ने अंगदेश में जैसे ही पदार्पण किया, वर्षा होने लगी। रोमपाद ने ऋश्यशृंग का स्वागत किया, साष्टांग नमस्कार किया और उसे इस प्रकार से अपने देश में ले आने के लिए क्षमा माँगी। फिर अपनी पुत्री शांता से उसका विवाह करवाया। ऋश्यशृंग, शांता के साथ अंगदेश में ही बस गया।

सुमंत की बतायी इस कथा को सुनकर दशरथ बहुत ही आनंदित हुए। वसिष्ठ महामुनि की अनुमति पाकर, अपनी पत्नियों व मंत्रियों को लेकर दशरथ अंगदेश गये। रोमपाद ने दशरथ का भव्य स्वागत किया। फिर सहर्ष अपने दामाद ऋश्यशृंग व पुत्री शांता को दशरथ के साथ अयोध्या भेजा।

ऋश्यशृंग के अयोध्या आये कुछ दिन बीत गये। वसंत ऋतु ने प्रवेश किया। दशरथ ने

ऋश्यशृंग से कहा, ''कृपया आप यज्ञ का प्रारंभ कीजिये और स्वयं उसे चलाइये।''

अश्वमेध यज्ञ के लिए बहुत बड़े पैमाने पर तैयारियाँ शुरू हो गयीं। यज्ञ करनेवाले, वेदों का पठन करनेवाले सुयज्ञ, वामदेव, बाबालि, काश्यप आदि ब्राह्मण श्रेष्ठ निमंत्रित किये गये। सरयू नदी के उत्तरी तट पर यज्ञशाला का निर्माण हुआ।

शुभ मुहूर्त के दिन दशरथ यज्ञशाला पहुँचे। यज्ञ शुरू हो गया। प्रथम हविर्भाग इंद्र को अर्पित करने के बाद होम चलने लगा।

अश्वमेध यज्ञ तीन दिवसों का यज्ञ है। शास्त्रोक्त विधि से समाप्ति के बाद दशरथ ने यज्ञ करानेवाले ऋत्विजों को सारी भूमि दान में दे दी। उन्होंने दशरथ से कहा, ''महाराज, भूमि लेकर हम क्या करेंगे? इस भूमि के बदले हमें मणियाँ, सोना, गायें या कुछ और जो भी है, दान में दीजिये।'' दशरथ ने उन्हें दस लाख गायें, सौ करोड़ का सोना, चार सौ करोड़ की चांदी दान में दिये।

ब्राह्मणों को जो भी दान में मिला, उसे उन्होंने ऋश्यशृंग व वसिष्ठ को समर्पित कर दिया। इतने में एक दरिद्र ब्राह्मण वहाँ आया और दशरथ के सामने हाथ फैलाये। दशरथ ने तुरंत अपने हाथ का कंकण उतारा और उस ब्राह्मण को दे दिया। सब ब्राह्मणों ने दशरथ की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

अश्वमेध यज्ञ जैसे ही पूरा हुआ, ऋश्यशृंग ने दशरथ से पुत्र कामेष्टि विधि पूरी करवायी। समस्त देवी-देवता आकर अपने-अपने उचित स्थानों
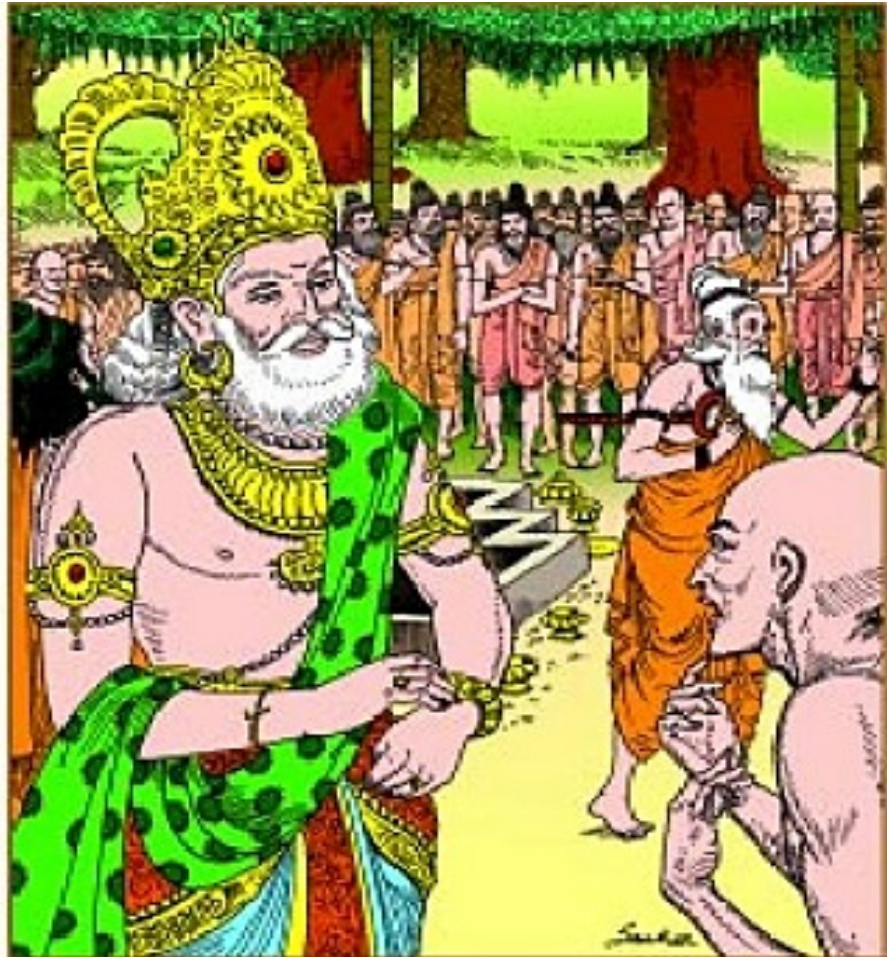
पर आसीन हो गये। उस अवसर पर देवताओं ने ब्रह्मा से सविस्तार बताया कि वे रावणासुर के हाथों कितना सताये जा रहे हैं।

ब्रह्मा ने उनसे कहा, ''दुष्ट रावण ने वरदान माँगा था कि उसकी मृत्यु देव, दानव, गंधर्व, यक्ष के हाथों न हो। उसकी दृष्टि में मानवों की कोई हस्ती ही नहीं थी। वह उन्हें अशक्त, निस्सहाय व भीरु मानता था। उसका विश्वास था कि मनुष्य जैसा प्राणी भला उसका क्या बिगाड़ सकता है! इसी कारण उसने मनुष्यों से रक्षा नहीं माँगी। सुनो, महाविष्णु दशरथ की पत्नियों में से किसी का एक पुत्र होकर जन्म लेंगे और नर रूप में रावण का संहार करेंगे।'' यह घोषणा सुनकर देवता बहुत प्रसन्न हुए।

इतने में होम कुंड से जगमगाता हुआ एक

दिव्य स्वरूपी प्रकट हुआ। वह दिव्य स्वरूपी अपने हाथों में एक कलश लिये हुए था। वह कलश सोने का था और उसका ढक्कन चांदी का।

उस दिव्य स्वरूपी ने दशरथ से कहा, "राजन्, देवताओं ने इस कलश में अपनी पकाई खीर भर कर दी है। प्रजापति की आज्ञा के अनुसार मैं इसे लेकर आया हूँ। यह खीर तुम अपनी पत्नियों को खिलाओगे तो वे गर्भवती होंगी और पराक्रमी पुत्रों को जन्म देंगी।"

दशरथ ने बड़े ही आनंद से उस कलश को अपने हाथों में लिया और उस दिव्य स्वरूपी की प्रदक्षिणा की।

दशरथ ने उस कलश में भरी खीर का आधा भाग कौसल्या को दिया। शेष खीर में आधा भाग सुमित्रा को और शेष आधा भाग कैकेयी को। तीनों को देने के बाद जो बचा, उसे पुनः सुमित्रा को दिया। शीघ्र ही तीनों गर्भवती हुईं।

एक ओर महाविष्णु मानव रूप में प्रकट होने की तैयारियाँ कर रहे थे तो दूसरी ओर ब्रह्मा की आज्ञा के अनुसार देवताओं ने काम रूपी वानरों की सृष्टि की।

देवेंद्र से वाली, सूर्य से सुग्रीव, कुबेर से गंधमादन, अश्विनी देवताओं से मैंदद्विविद, विश्वकर्मा से नल, अग्नि से नील, वरुण से सुषेण, पर्जन्य से शरभ, वायुदेव से हनुमान जन्मे। ये सबके सब महाबली वानर श्रेष्ठ थे। शेष देवताओं से हज़ारों वानर जन्मे। ये वानर ऋष्यमूक नामक पर्वत के निकट बस गये और वाली, सुग्रीव को अपना राजा बनाकर तथा नल, नील, हनुमान आदि को अपना मंत्री बनाकर जीवन यापन करने लगे।

पुत्र कामेष्टि की पूर्ति के बारहवें महीने में चैत्र शुक्ल नवमी के दिन पुनर्वसु नक्षत्र में कौसल्या ने राम को जन्म दिया। पुष्यमी नक्षत्र में कैकेयी ने भरत को जन्म दिया। अश्लेषा नक्षत्र में मध्याह्न समय पर सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघ्न को जन्म दिया।

अयोध्या नगर के नागरिकों ने आनन्दोत्सव मनाया। गलियाँ नाचने-गानेवालों से खचाखच भर गयीं। पूरे राज्य में खुशी की लहर फैल गई। गरीबों में भोजन और वस्त्र बाँटे गये। महीनों तक वातावरण में शीत-संगीत का स्वर गूंजता रहा। राजा के महल में ही नहीं, बल्कि हर प्रजा के घर

में राजकुमारों के जन्म का उत्सव मनाया जा रहा था। दशरथ ने बिपुल मात्रा में ब्राह्मणों को गोदान व अन्न दान किया।

चारों बालक क्रमशः बडे होने लगे। यद्यपि राम, लक्ष्मण एक ही माँ के पुत्र नहीं थे, परंतु सदा मिल जुलकर रहते थे। उसी प्रकार भरत, शत्रुघ्न दोनों एक साथ घूमते-फिरते, खेलते-कूदते थे। चारों ने वेद शास्त्रों का अध्ययन किया, धनुर्विद्या में निष्णात बने और पिता की सेवा-सुश्रूषा करते हुए युवक हुए। दशरथ उनके बिवाह को लेकर मंत्रियों और पुरोहितों से सलाह-मशविरा करने लगे।

राजा और मंत्री जब इसी चर्चा में तल्लीन थे, तब द्वारपालक ने आकर कहा, "महाराज, कुशिक वंश के, गाधि राजकुमार विश्वामित्र महामुनि आपके दर्शनार्थ आये हैं और द्वार पर प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

दशरथ तुरंत पुरोहित को लेकर विश्वामित्र से मिलने गये और उनकी पूजा की, उनका सादर स्वागत किया।

विश्वामित्र ने कहा, "राजन्, तुम और तुम्हारी प्रजा सकुशल है न? शत्रु का कोई भय तो नहीं है न?" कुशल-मंगल जानने के बाद उन्होंने बसिष्ठ से बातें कीं और राजभवन में प्रवेश करके उचित आसन पर आसीन हो गये।

"महामुनि, आपके आगमन से हम धन्य हुए। कहिये, मुझसे आपको क्या चाहिये।" दशरथ ने पूछा।

विश्वामित्र प्रसन्न होते हुए बोले, "राजन्, जिस

काम पर मैं आया हूँ उसे पूरा करके प्रमाणित करो कि तुम सत्यनिष्ठ हो। मैंने एक यज्ञ प्रारंभ किया, किन्तु दो पराक्रमी राक्षसों ने मेरी यज्ञ वेदिका पर रक्त मांस बिखेर दिया और मेरे व्रत संकल्प को बिगाड़ डाला। तुम मेरे साथ अपने बड़े बेटे राम को भेज दो। मारीच, सुबाहु नामक उन दोनों राक्षसों से मेरे यज्ञ की रक्षा करेगा।"

यह सुनते ही दशरथ को लगा कि उसका हृदय मानों फट गया हो। भय-दुख उमड़-उमड़कर आने लगे। सिंहासन से उतरकर कांपते हुए स्वर में दशरथ ने कहा, "महामुनि, राम अभी बालक है। उसके सोलह साल भी पूरे नहीं हुए। वह धनुर्विद्या भी भली-भांति नहीं जानता। भला, वह राक्षसों से क्या लड़ेगा? मेरे पास एक अक्षौहिणी सेना है। मैं स्वयं आकर उनसे युद्ध

करूँगा और उन्हें मार डालूँगा। बताइये तो सही, आखिर वे राक्षस हैं कौन?''

विश्वामित्र ने कहा, ''तुम तो रावण नामक राक्षस राजा को जानते हो। ब्रह्मा को प्रसन्न करके उसने कितनी ही अमोघ शक्तियाँ प्राप्त कीं। रावण विश्रवस का पुत्र है, कुबेर का साक्षात् छोटा भाई है। जब वह स्वयं यज्ञ को भंग नहीं कर सकता, तब इन बलशाली मारीच, सुबाहु को भेजता रहता है।''

''बाप रे! रावण? उसका सामना भला मैं क्या करूँगा? जब यह काम मुझसे ही नहीं हो सकता तो बालक राम क्या करेगा?'' दशरथ ने अपनी असहायता जतायी।

क्रोध से विश्वामित्र की आँखें लाल हो गयीं। यह कहते हुए वे अचानक उठ गये, ''महाराज, वचन से मुकर गये न? क्या यही तुम्हारी सत्यनिष्ठा है? अपकीर्ति ढोते हुए सुखी रहो।''

तब कुलगुरु वसिष्ठ ने दशरथ को डाँटते हुए कहा, ''राजन्, जो करना नहीं चाहिये, वह तुम कर रहे हो। वचन से मुकरकर इक्ष्वाकु वंश को कलंकित कर रहे हो। तुमने विश्वामित्र को क्या समझ रखा है? कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं, जिसे वे न जानते हों। नये अस्त्रों की सृष्टि भी वे कर सकते हैं। क्या तुमने यह समझ रखा है कि वे उन राक्षसों को मार नहीं सकते, इसीलिए तुम्हारे पास आये हैं? तुम्हारे पुत्रों का भला करने के लिए ही वे आये हैं। तुम्हारे पुत्रों के विश्वामित्र के साथ रहने से न केवल उनकी विद्या और ज्ञान में पूर्णता आयेगी, बल्कि तुम्हारे पुत्रों को यश मिलेगा। सर्वत्र उनकी कीर्ति फैलेगी। तुम्हारे पुत्र साधारण मानव नहीं हैं। वे दिव्य पुरुष हैं। भविष्य में जो कार्य उनके द्वारा सम्पन्न होनेवाला है, उसकी आधारशिला तैयार करने के लिए विश्वामित्र तुम्हारे बालकों को लेने आये हैं। इसीलिए निश्चिंत होकर राम को उनके साथ भेजो। जब तक वे उनके साथ हैं, उनका कोई भी कुछ बिगाड़ नहीं सकता।''

वसिष्ठ के हितबोध से दशरथ में धैर्य आ गया। उन्होंने राम, लक्ष्मण को विश्वामित्र के सुपुर्द किया। राम, लक्ष्मण विश्वामित्र के पीछे-पीछे जाने लगे। दोनों के पास धनुष बाण थे। उनके हाथों में खड्ग भी थे।

अपात्र दान

एक गाँव में गंगाराम और दुर्गादास नामक गल्ले के दो व्यापारी थे। वे दोनों व्यापार में साझेदार थे। कई सालों से बिना मतभेद के उन्हें व्यापार करते देख जब भी उस गाँव में भाइयों के बीच कोई झगड़ा होता तो गाँव के बुजुर्ग लोग उनकी मैत्री का उदाहरण लेकर कहा करते थे, "अरे, तुम लोग गंगाराम और दुर्गादास को देख सबक़ क्यों नहीं सीखते ?"

वे दोनों मित्र हर साल संक्रांति के दिन अपने लाभ बांट लेते थे। उस वक़्त गंगादास अपने हिस्से के लाभ में से तीन सौ पैंसठ रुपये अलग निकाल कर एक पोटली बांध लेता था। मगर दुर्गादास ने कभी उससे यह नहीं पूछा, "भाई, तुम ये रुपये इस तरह पोटली बांधकर क्यों रखते हो? इसका माने क्या है? मुझसे क्यों नहीं बताते?" इस पर गंगाराम को भी खुद आश्चर्य होता था कि दुर्गादास क्यों कर नहीं पूछता।

हर साल उस गाँव की सीमा पर हाट-मेला लगता था। उस वक़्त हाट के साथ जूआ और दारू पीना भी ख़ूब चलता था। हाट के प्रदेश से थोड़ी दूर पर एक टीला था। उस टीले पर एक कुआँ था, जिसके चारों तरफ़ ऊँचे व लंबे पेड़ थे। वह स्थान मुसाफ़िरों के आराम करने व खाने के लिए ज़्यादा अनुकूल था। तीन सौ पैंसठ रुपये की पोटली हर साल सब की आँख बचाकर गंगाराम उस कुएँ के पास छोड़कर चला जाता था। लेकिन वह यह नहीं जानता था कि वे रुपये कौन उठाकर ले जाता है।

मगर एक साल गंगाराम ने सोचा कि पता लगा लें कि यह गुप्त दान किसके हाथ लगता है। गंगाराम कुएँ के पास से निकल गया, फिर लौट कर उसी जगह आ पहुँचा। उसने देखा कि कोई अपने सर पर तौलिया डाले पेड़ों की ओट में से चला जा रहा है। गंगाराम ने रुपयों की पोटली कुएँ के पास जो रखी थी, वह गायब थी।

गंगाराम यह सोचकर उस नक़ाबधारी का

पीछा करने लगा। उसे आख़िर पता चला कि वह व्यक्ति और कोई नहीं, बल्कि दुर्गादास ही है।

"दोस्त! मैंने सोचा था कि मेरे रुपये किसी गरीब के हाथ लगे और उसका लाभ उठाये, पर वे रुपये तुम्हारे हाथ लग गये?" गंगाराम ने पूछा।

दुर्गादास ने मुस्कुराते हुए पूछा, "मित्र, जब तुमने ये रुपये फेंक दिये, तब ये रुपये चाहे किसीके भी हाथ लगें, इससे तुम्हारा क्या मतलब है?"

"अगर तुम को मालूम हो जाये कि मैं क्यों ये रुपये स्वयं फेंक रहा हूँ, यह बात शायद न कहते।" इन शब्दों के साथ गंगाराम ने अपनी कहानी सुनाई:

"बचपन में ही मेरे माँ-बाप मर गये। मैं गरीब था, अपना पेट भरने के लिए मुझे छोटी उम्र में ही तरह-तरह के काम करने पड़े। एक बार अकाल पड़ने के कारण मेरे गाँव के लोग चारों तरफ़ भाग गये। मैं उस वक़्त इस गाँव में आया। यहाँ पर एक बड़ी हाट लगी थी और मेला भी लगा था। सुना था कि वह संक्रांति का दिन है। मैं चार दिनों से भूखा था। याचना से काम न चला। एक मिठाई की दूकान में लड्डू चुरा कर पकड़ा गया और मार खाया। भूख की पीड़ा और असहायता की वज़ह से मर जाने की मेरी इच्छा हुई। मैं इसी कुएँ में कूदने आया। कुएँ में कूदने ही जा रहा था कि मेरे पैर में कोई चीज़ लग गई। वह लाल पत्थर जड़ी सोने की अंगूठी थी। बस! मेरे मन में ज़िंदगी के प्रति फिर आशा लगी। उस अंगूठी को बेच कर मैंने एक दुधारू भैंस ख़रीद ली। उस से जो आमदनी हुई, मैंने एक बैलगाड़ी ख़रीदी। इसके बाद तुमसे मेरी दोस्ती हुई। गल्ले के व्यापार में दोनों को लाभ हुआ। इसीलिए जिस दिन मुझे कुएँ के पास सोने की अंगूठी मिली, उसी संक्रांति के दिन से कुएँ के पास तीन सौ पैंसठ रुपये गुप्त रूप से छोड़ता आ रहा हूँ।"

ये सारी बातें सुन दुर्गादास ने कहा, "हो सकता है कि तुम्हारा विचार बड़ा ही अच्छा हो। मगर तुम्हारे रुपये जिसके हाथ लगते हैं, उसकी बुद्धि के कुमार्ग पर जाने की गुंजाइश भी है। चाहे तो हम प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं।" तब गंगाराम को साथ ले कुएँ के पास लौट आया और दोनों एक पेड़ पर जा बैठे।

दुर्गादास ने एक छोटी थैली निकाल कर कुएँ के निकट फेंकी। थोड़ी देर बाद उधर से गेरुए

वस्त्र धारण किये हुए सफ़ेद दाढ़ीवाला एक साधु आ निकला। उसने खाने की पोटली कुएँ के जगत पर रख दी, हाथ-मुँह धोने के लिए पानी खींचने के ख़्याल से बाल्टी उठाई, तभी उसकी दृष्टि दुर्गादास के द्वारा फेंकी गई थैली पर पड़ी।

दूसरे ही क्षण साधु के भीतर एक विचित्र परिवर्तन हुआ। अपने कीर्तन बंद कर उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ा कर देखा कि कहीं कोई उसे देख तो नहीं रहा है। तब उस थैली को अपने झोले में डाल लिया, वह स्वगत में कहने लगा, ''इतने समय बाद इस कमबख़्त ज़िंदगी से मुक्ति मिल गई है। अब शादी करके सुख भोगूँगा।'' यों कहते खाने की बात तक भूलकर वह साधु वहाँ से चला गया।

गंगाराम के मुँह से निकल पड़ा, ''समस्त को त्यागनेवाले साधु इस उम्र में शादी करना चाहते हैं?''

दुर्गादास ने गंगाराम को मौन रहने का संकेत किया और चांदी का एकरुपया निकाल कर कुएँ के जगत पर फेंक दिया।

थोड़ी देर बाद दो जुआरी परस्पर निंदा करते हुए कुएँ के पास पहुँचे।

''अबे, दुधारू भैंस को ख़रीदने के लिए मैं जो रुपये लाया, तुम्हारी बातों में आकर वे रुपये जूए में खो बैठा। हाथ में एक कौड़ी तक न बची। मैं कौन-सा मुँह लेकर अपने घर जा सकता हूँ? इससे अच्छा यह होगा कि मैं इस कुएँ में कूद कर अपनी जान दे दूँ।'' यों कहते एक आदमी कुएँ की ओर भागा। दूसरा आदमी उसे रोकने के प्रयत्न में था, तभी पहले आदमी को एक रुपये का सिक्का

दिखाई दिया। झट उसे अपने हाथ में लेकर बोला, ''अच्छे मौक़े पर यह रुपया हाथ लगा। शायद इस रुपये से मेरे खोये हुए सारे रुपये मिल जायें। क्या पता?'' ये शब्द कहते वह जुआखाने की ओर दौड़ पड़ा।

''इसमें मेरा भी आधा हिस्सा है।'' दूसरा आदमी चिल्लाते हुए उसके पीछे हो लिया। गंगाराम ने दुर्गादास से कहा, ''दोस्त, यह क्या है? यह जूए में सारे रुपये खोकर रो रहा था, पर एक रुपया के हाथ लगते ही फिर जूआ खेलने भाग गया।''

दुर्गादास मौन रहा।

इसके थोड़ी देर बाद एक लकड़हारा लकड़ी का गट्ठर पीठ पर लादे कुएँ की ओर आया। दुर्गादास ने रुपयों की छोटी-सी थैली निकाल कर लकड़हारे तथा कुएँ के बीच फेंक दी।

लकड़हारा यह कहते आगे बढ़ा, ''मैं ये लकड़ियाँ कब बेचूँगा और कब घर पहुँच कर कांजी बनाऊँगा।'' उसने बाल्टी से पानी खींचा; भर पेट पानी पीकर हाट की ओर चला गया।

''अरे, यह क्या? रास्ते में रुपयों की थैली पड़ी देख उस ओर ध्यान दिये बिना यह आदमी चला गया।'' गंगाराम ने अचरज से कहा।

''देखा! तुम्हारा गुप्त दान अपात्र व्यक्तियों के हाथों में पड़कर कैसी हानि पहुँचा रहा है। बिना श्रम किये अनायास प्राप्त होनेवाले धन का मूल्य जाननेवाले लोग बहुत ही कम हैं। अधेड़ उम्र के साधु का मन भी धन को देखते ही बदल गया। उसने यह भी नहीं देखा कि उस पोटली में ठीकरे भरे हैं, पर सुखों के प्रति अपने मन को केन्द्रित किया। इस प्रकार रुपये को देखते ही जुआरी के मन में जो ज्ञानोदय हुआ, वह जाता रहा। वास्तव में श्रम के द्वारा जो सुधर जाता है, वह अनायास मिलनेवाले धन की परवाह नहीं करता। लकड़हारा अपने श्रम के फल पर ही आशा लगाये बैठा है।'' दुर्गादास ने समझाया।

''तब क्या मेरा आज तक का गुप्तदान मिट्टी में मिल गया?'' गंगाराम ने पूछा।

''नहीं, वह धन मैंने सुरक्षित रखा है। उस धन से हम हमदोनों के नाम पर एक पाठशाला का भवन बनायेंगे।'' दुर्गादास ने समझाया।

31
आर्य
शान्तिपुर में नये राजा के स्वागत के लिए तैयारी हो चुकी है। अपने सेनापति के नेतृत्व में हुए विद्रोह के बाद राजा शान्तिदेव रहस्यमय ढंग से गायब हो जाता है। रानी और उनका शिशु एक गुप्त मार्ग से भाग जाते हैं। अपने एक वर्षीय शिशु को जयानन्द मुनि की देखरेख में छोड़ कर रानी अपने प्राण छोड़ देती है। जयानन्द उसका नाम आर्य रखते हैं। शीघ्र ही उसके राज्याभिषेक की आशा की जा रही है।
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
चित्र : गाँधी अय्या
महल के प्रांगण में...
मानवेन्द्र आ रहे हैं।
राजा शान्तिदेव के मंत्री?
सुखदेव! हम लोग बहुत दिनों के बाद मिल रहे हैं।
महानुभाव, ये जयानन्द हैं।
गुरु जी, आपने हमें एक राजा प्रदान किया है।
राज्याभिषेक तक यह राजकुमार आर्य रहेगा।
सुखदेव अपने अंगरक्षकों को कुछ निर्देश देता है।
जाओ और पालकियों को सुरक्षापूर्वक ले आओ।
दो पालकियों को प्रांगण में लाया जाता है।

पहले आर्य अपनी पालकी से बाहर निकलता है।
राजधानी में आपका स्वागत है, राजकुमार आर्य!
मैं सचमुच अभिभूत हूँ।
आर्य को सुखदेव प्यार से गले लगाता है।
मानवेन्द्र तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं, आर्य!
महानुभाव, आपने यहाँ आकर मुझे धन्य कर दिया है।
शान्तिपुर भाग्यशाली है कि इतने वर्षों के बाद इसे एक राजा मिला है।
आर्य जयानन्द के पास जाता है।
मेरे पितामह कहाँ हैं?
वे शीघ्र ही यहाँ होंगे।
एक रथ तेज़ी से महल के निकट आता हुआ दिखाई देता है।
देखो वहाँ, राजा प्रेमनाथ आ रहे हैं।
बसन्त उनके साथ मार्गरक्षक है।
बसन्त घोड़े से उतरकर रथ को फाटक से निकालता है।

मानवेन्द्र आर्य को राजा प्रेमनाथ के पास ले जाते हैं।
मैं बहुत दिनों से तुमसे मिलना चाह रहा हूँ, आर्य!
मेरा पौत्र कहाँ है?
अब हम लोग दरबार भवन में चलें।
आर्य राजा को प्रणाम करता है।
जनसमूह से जय जयकार की आवाज़!
मेरे मन में भी बहुत दिनों से आप के दर्शन की अभिलाषा थी, पितामह।
सुखदेव के साथ खड़ी सुकन्या बहुत प्रसन्न दिखाई देती है।
पिता, क्या राजकुमार का राज्याभिषेक आज ही होगा ?
वह किसी शुभ दिन पर होगा, सुकन्या।
अमृतपुर के राजा और मानवेन्द्र दरबार में प्रवेश करते हैं।
कितने दुःख की बात है कि शान्तिदेव जीवित नहीं रहे।
एक बहुत बड़ी त्रासदी कहना चाहिये।
आर्य और बसन्त प्रवेश करते हैं।
यह स्थान जंगल में पले व्यक्ति के लिए नहीं है।
अब तुम्हें एक बड़ी भूमिका निभानी है, राजकुमार आर्य!
मानवेन्द्र राजा प्रेमनाथ को एक सिंहासन की ओर ले जाते हैं और जयानन्द आर्य को दूसरे सिंहासन की ओर।

एक राजा को और एक अति शीघ्र ही राजा बननेवाले राजकुमार को देखकर दरबार का जनसमूह आनन्द से जयजयकार करता है।
राजकुमार आर्य की जय!
महाराज प्रेमनाथ की जय!
मैं राजकुमार की तावीज ले आया हूँ।
ओऽऽ! तुमने इसे याद रखा, सुखदेव!
जयानन्द राजकुमार को तावीज दिखाते हैं।
आर्य, जब तुम शिशु थे तब तुम्हारी माँ ने तुम्हें मेरे पास छोड़ दिया था। मैंने तुम्हारी तावीज हटा दी थी, ताकि तुम्हें कोई पहचान न सके।
मुझे इसके बारे में मालूम नहीं था।
महाराज! राजकुमार को इसे पहना दें।
आज मैं बहुत खुश हूँ।
राजा प्रेमनाथ राजकुमार के हाथ में तावीज बाँधते हैं।
याद रखो, तुम सूर्यवंशी हो। अच्छी तरह शासन करना।
महाराज! मैंने सुना है, पिता को प्रजा का कितना ख्याल था और प्रजा उन्हें कितना चाहती थी।
आर्य जनसमूह को सम्बोधित करता है।
मेरी इच्छा है कि शान्तिपुर राज्य पर प्रजा का ही शासन हो और मुझे लोग सिर्फ आर्य ही कहें जो नाम मेरे गुरु जी ने मुझे प्यार से दिया है।
जनसमूह हरेक वाक्य के अन्त में वाह वाह करती है।

शान्तिपुर का यह सौभाग्य है कि आप वापस आ गये हैं।
जब तक प्रजा मुझे चाहेगी तब तक मैं उनकी सेवा करता रहूँगा।
वसन्त राज्य की ओर से युद्ध करेगा।
राजकुमार, आप मुझे बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंप रहे हैं।
मेरे प्रिय पौत्र, याद रखो कि अमृतपुर का भी तुम पर अधिकार है। तुम मेरे उत्तराधिकारी बनोगे।
मैं उस दिन को देख रहा हूँ जब अमृतपुर राज्य शान्तिपुर के साथ मिलकर एक हो जायेगा।
शान्तिपुर और जयनगर के मिलन के बारे में क्या विचार है? क्या मेरी बेटी का हाथ स्वीकार करोगे?
हाँ, किन्तु गुरु जी की स्वीकृति यदि हो।
यह मेरी भी कामना है आर्य कि तुम उसे जीवन साथी के रूप में ग्रहण करो।
आप की आज्ञा सदा शिरोधार्य है, गुरु जी!
गुरु जी, यदि आप स्वीकृति दें तो हम लोग भगवती माता की पूजा के लिए जायेंगे।
आर्य और सुकन्या कनकदुर्गा के मन्दिर में जाते हैं। हर्ष और आनन्द में डूबे लोगों का समूह उनके साथ-साथ जाता है।
समाप्त

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

सुना है? बुक-प्लेट्स के नारे में?

तुमने डिनर-प्लेट्स तो सुना है, फिश-प्लेट्स भी; सुना है न? किन्तु क्या कभी बुक प्लेट्स भी सुना है? नहीं, यह दूसरे दो प्लेट्स को लेबल कहा जाता है।

पहले बुक-प्लेट्स पन्द्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में जर्मनी में बनाये गये थे। लेकिन ये कागज के नहीं थे। और न छपे हुए थे। वे लकड़ी के टुकड़ों से बनाये गये थे और तब हाथ से रंगे गये थे।

प्रथम मुद्रित बुक-प्लेट की डिजाइन सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में मशहूर पेंटर अलब्रेट ड्यूरे द्वारा बनाई गई थी। आज, बहुतों को पुराने बुक-प्लेट्स जमा करना अच्छा लगता है।

अपने भारत को जानो

भारत २६ जनवरी १९५० को प्रभुसत्ता-सम्पन्न गणतन्त्र राज्य बन गया। निम्नलिखित प्रश्न उसके बाद की अवधि से सम्बन्धित हैं। तुम इनमें से कितनों के उत्तर जानते हो?

१. राज्य सभा के चेयरमैन का पद कौन संभालता है?

(a) प्रधानमंत्री

(b) भारत के उपराष्ट्रपति

(c) अटोर्नी जनरल

(d) संसदीय मामलों के मंत्री

२. लोकसभा में पहला घण्टा किस काम पर व्यतीत किया जाता है?

(a) विचार-विमर्श पर

(b) सदस्यों के अग्रिम प्रश्नों के उत्तर देने पर (c) विधेयकों को प्रस्तावित करने पर (d) न टालने योग्य अत्यावश्यक मुद्दों पर बहस करने पर

३. भारत में कितने उच्च न्यायालय हैं?

(a) १८ (b) २८ (c) २२ (d) ३२

१. लोकसभा में कितने सदस्य होते हैं?

(a) ३५० (b) ४५०

(c) ५५० (d) ५५२ सदस्य

(उत्तर पृष्ठ ७० पर)

प्रदूषण-मुक्त झील

वीना की कक्षा की छात्राएँ एक प्रोजेक्ट के सिलसिले में एक निकटस्थ झील का अध्ययन करने जाती हैं। क्लास टीचर मिस रोडरिग्स उन्हें ग्रूप्स में बाँट देती है। यह प्रोजेक्ट इस शिकायत पर बनाया गया कि झील को प्रदूषित किया जा रहा है। क्या इसका कोई समाधान है? बच्चों से यह उम्मीद की जा रही है कि वे कुछ सुझाव देंगे। जिनके सुझाव सबसे अच्छे होंगे उन्हें उनकी टीम के लिए पुरस्कार मिलेगा। बच्चे सुबह में सारे समय झील पर घूमते रहे। स्कूल वापस आने पर अपनी-अपनी रिपोर्ट तैयार करने के लिए उन्हें एक घण्टा समय दिया गया। रिपोर्ट लेने के बाद उन्हें छुट्टी दे दी गई।

दूसरे दिन, जब मिस रोडरिग्स क्लास में प्रवेश करती है, बच्चे सांस रोककर प्रतीक्षा करने लगते हैं। वह कहती है: "तुममें से ज्यादा लोगों ने झील पर क्या-क्या हो रहा है देख लिया है -झील में लोग नहा रहे हैं, कपड़े साफ करने के लिए हर तरह के पाबडर का प्रयोग कर रहे हैं, गायें और भैसों को उसके अन्दर धो रहे हैं, बच्चे किनारे पर मल-मूत्र त्याग रहे हैं। कुछ छात्रों ने इस दुरुपयोग को रोकने के लिए झील के चारों ओर चेतावनी की सूचना लगा देने की सलाह दी है।" कुछ देर रुकने के बाद वह फिर बताती है:

"चेतावनी और कभी-कभी बल-प्रयोग जैसे निरोधी उपायों से भी अधिक महत्वपूर्ण सकारात्मक कदमों की ओर किसी का ध्यान नहीं गया, बीना और उसकी टीम को छोड़ कर! उसकी टीम ने सुझाव रखा है कि धोबी घाट की तरह एक अलग शेड़ निर्मित कर मवेशियों के स्प्रे वाश के लिए प्रबन्ध होना चाहिये। उन्होंने बच्चों से मिल कर उन्हें यह बताने का भी प्रस्ताव रखा है कि कैसे झील और इसके परिवेश को प्रदूषित होने से बचाना चाहिये; वे बड़ों से भी अपील करेंगे कि नहाते समय हानिकारक साबुन का प्रयोग न करें। ऐसे सकारात्मक सुझाव देने के कारण, मैं समझती हूँ कि बीना और उसकी टीम को इनाम दिया जाना चाहिये!"

बच्चे ताली बजाकर बीना का उत्साह बढ़ाते हैं। "वाह वाह!"

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

TATA NARAYANAMURTHY

TATA NARAYANAMURTHY

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

अक्षित आदित्य तिलकराज गुप्ता,
श्री प्रमोद कुमार बंसल,
मकान नं.२४४९/१३,
मुकन्द लाल नेशनल कॉलेज के साथ,
रादौर (यमुना नगर)-१३५१३३
हरयाणा.

विजयी प्रविष्टि

''गजराज सामने देव समान, करूँ नमन,
अश्व की सवारी, लगे प्यारी, करें भ्रमण ।''

''अपने भारत को जानो'' प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

१. भारत के उपराष्ट्रपति।
२. सदस्यों के अग्रिम प्रश्नों के उत्तर देने पर। इसे प्रश्न-अवधि कहा जाता है।
३. १८   ४. ५४५

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)